भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | **नवम्बर** 2008 | **अंक** 11

अच्छी पुस्तकें
चेतना और आत्मा
हैं मानव की।
पुस्तक और
दोस्त कम हों, किन्तु
खाँटी सच्चे हों।
पुस्तक मेला
पावन महाकुंभ
ज्ञानार्थियों का।
चुकाया जाता
ज्ञान प्राप्ति के लिए
ग्रन्थों का मूल्य।
नैन प्रदीप
हैं पुस्तकें, तिमिर
चीरने हेतु।

—नलिनीकान्त, अंडाल, प० बंगाल

कविता

किताब ही जीवन है
और
जीवन है किताब
कहा बाबा कबीर ने—यद्यपि
पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ/लेकिन है यह
निश्चित/कि अक्षर से लेकर शब्द-
अर्थ/सब सिखाती है किताब
और प्रेम की परिभाषा भी,
अक्षर है ब्रह्म/इसलिए—
सर्वव्यापक है किताब/नहीं होगी
अतिशयोक्ति—
अगर कहा जाय किताबों का है शासन
वस्तुतः जगत् गुरु है—किताब ?

— चन्द्रबली शास्त्री

इतिहास की धरोहर हैं
ज्ञान और विज्ञान हैं
बाइबिल, कुरान, गीता
वेद-पुराण हैं किताबें
गुरु मित्र बंधु
पथ-प्रदर्शक हैं किताबें
मानवता की प्रतीक
दार्शनिक हैं किताबें
जीवन का अर्थ बताती हैं किताबें!

— आरती सारंग

शक्ति के विद्युत् कण....

क्रान्तदर्शी कवि ने अपने चतुर्दिक् व्याप्त अणुओं-परमाणुओं का स्पंदन लक्ष्य करते हुए उनकी शक्ति पहचानी और अपनी संवेदना के स्तर पर उन शक्तिकणों की समेकित ऊर्जा द्वारा मानवता के विजय की परिकल्पना की। यह कवि-कल्पना असम्भव नहीं बल्कि एक सत्य का साक्षात्कार है, जिसके मूल में है वह संवेदना जो अपने आसपास बिखरी हुई मानवीय ऊर्जा का संचयन करने की क्षमता रखती है। भौतिक-स्तर पर यह ऊर्जा निर्माण और विनाश, दोनों ही शक्तियों से युक्त होती है तो मानवीय-स्तर पर भी यह सृजन और संहार का कार्य करती है।

आणविक-शक्ति के प्रथम प्रयोक्ताओं ने शक्ति-सन्तुलन के लिए विश्व स्तर पर परमाणु-अप्रसार या परिसीमन कार्यक्रम आरम्भ कर दिया है। इसी कार्यक्रम के तहत भारत के परमाणु-प्रयोगों को शस्त्रीकरण के बजाय विकासपरक कार्यों की ओर उन्मुख करने के लिए भारतीय प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति के बीच एक सहमति बनी। दोनों देशों के आन्तरिक विचार-विमर्श और काफी जद्दोजेहद के बाद यह समझौता 1 2 3 सम्भव हुआ है। भारत ने अमेरिका का यह प्रस्ताव राष्ट्रीय उद्योग-तंत्र को ऊर्जा प्रदान करने और विकास को गतिशील बनाने के उद्देश्य से स्वीकार किया है।

एक ओर लोकमंगल की भावना से प्रेरित भारत सरकार आणविक-शक्ति का संचयन करने की दिशा में अग्रसर है तो दूसरी ओर निहित-स्वार्थों से संचालित धार्मिक, राजनयिक, आपराधिक संगठन देश की जीवंत आणविक-ऊर्जा का अपव्यय कर रहे हैं। वस्तुतः मनुष्य में अन्तर्निहित ऊर्जा ही इन संगठनों को शक्ति प्रदान करती है और वे अपने-अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए छात्रों एवं बेरोजगार नौजवानों का इस्तेमाल करते हैं। युवकों को प्रलोभन देकर उन्हें बरगलाया जाता है और दिशाहीन मार्ग पर उन्हें धकेल दिया जाता है।

इन स्थितियों के समानांतर देश की सामासिक-संस्कृति को विखंडित करने का षड्यंत्र भी जारी है। असम, मणिपुर, उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र जैसे प्रान्त इस विखण्डन के शिकार हो रहे हैं। आज़ादी के पहले से ही विभिन्न प्रान्तों के लोग शैक्षणिक या रोजगारपरक आवश्यकताओं के चलते अलग-अलग शहरों, प्रान्तों में जाकर बस गये जहाँ वे अपनी इयत्ता सुरक्षित रखते हुए भी उस स्थान की संस्कृति में रच-बस गये, जिसने भारतीय-समाज की सामासिक पहचान बनायी है। आज इस पहचान पर प्रश्नचिह्न लग रहे हैं।

इस समूचे परिदृश्य में राष्ट्रीय-मानसिकता का अभाव साफ दिखलायी पड़ता है, साथ ही शैक्षणिक-संस्कारों की कमी भी लक्षित होती है। जब तक हमारी शिक्षा के संस्कार हमें राष्ट्रीय-चेतना से उद्बुद्ध नहीं करेंगे तब तक देश की युवाशक्ति दिग्भ्रांत होकर स्वार्थान्ध शक्तियों द्वारा संचालित रहेगी और कोई भी सरकार इस अराजकता का

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

सामना करने में सक्षम न हो सकेगी। अत: जरूरी है मानवीय-संवेदना को जागृत करने वाले शैक्षणिक-संस्कार, जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक, पूरब से पश्चिम तक फैले हुए विशाल राष्ट्र की सामासिक-संस्कृति से युवा-शक्ति को समीकृत कर सकें। भविष्य की यह जीवंत आणविक-ऊर्जा मनुष्य की जययात्रा का पथ प्रशस्त कर सके तभी सत्य होगी कवि-कल्पना—

शक्ति के विद्युत् कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं हो निरुपाय,
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।

सर्वेक्षण

मुम्बई के चर्च गेट-स्टेशन के ठीक सामने दलाल स्ट्रीट में स्थित गगनचुंबी अट्टालिका भारतीय बाजार में अपनी पहचान रखती है। इस इमारत में बरसों से हमारी अर्थव्यवस्था पल रही है। इसी इमारत में शेयरों के उतार-चढ़ाव पर सट्टेबाजी का सिलसिला भी बदस्तूर जारी है। पिछले दिनों, उन्मुक्त बाज़ार-व्यवस्था लागू होने के बाद से भारत के बाज़ार में बड़ी मात्रा में विदेशी पूँजी का निवेश हुआ जिसके प्रभाव से शेयरों की कीमतों ने छलाँग लगायी। बाज़ार का सूचकांक ऊपर-ही-ऊपर चढ़ता गया। ज्यादा मुनाफे के लालच में कई लोगों ने अपनी जमा-पूँजी भी दाँव पर लगा दी। इसी बीच आधुनिक विश्व के अर्थ तंत्र की धुरी बने हुए अमेरिका का बाज़ार, अपने ही बनाये चक्रव्यूह में फँस कर मन्दी की चपेट में आ गया। इस मंदी का प्रभाव दुनिया के दूसरे देशों की तरह भारत के बाजार पर भी पड़ा। विदेशी पूँजी की निकासी शुरू हो गयी और बाज़ार का सूचकांक क्रमश: नीचे उतरने लगा। कल तक जिन लोगों के दिल बल्लियों उछल रहे थे वे बाज़ार के एक झटके में ही बैठ गये। कई लोग हृदयाघात से पीड़ित हुए तो कुछ लोगों ने आत्महत्या कर ली। इन व्यक्तिपरक त्रासदियों के समानांतर भारतीय बाज़ार भी मँहगाईग्रस्त हो गया जिसका सीधा असर आम आदमी पर पड़ रहा है। इन विषम परिस्थितियों से सीख लेकर यदि हमारे नीति-निर्माता भारतीय परिवेश के अनुकूल, स्वतंत्र अर्थतंत्र की संरचना करें तभी निवेशकों को उचित लाभांश मिल सकेगा और विश्व बाज़ार में हम अपनी स्थिति सुदृढ़ कर सकेंगे।

आइये,
एक दीपक तो जलाईये!

आलोक-पर्व का मंगल आमंत्रण है : दीपक जलाईये। जीवन की त्रासदियों के अन्धकार से जूझते हुए हम दीपक जलाते हैं, देखते-देखते चारों ओर जल उठती हैं दीपमालाएँ और आकाश तक फैल जाता है धरती का आलोक जो अपने प्रभापुंज से रिक्त को भी समृद्ध कर देता है। हमारी सभ्यता की जीवंत सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा है यह दीपोत्सव। धनतेरस से भाई दूज तक की पाँच तिथियाँ उन ऐतिहासिक स्मृतियों से जुड़ी हैं जो हमारी संस्कृति की विरासत हैं। उसी सनातन-क्रम को आगे बढ़ाते हुए आइये, एक दीपक तो जलाइये। दीप ज्योति का आलोक हमें विवेकपूर्ण सद्बुद्धि प्रदान करे, हमें सत्कर्म की प्रेरणा दे। इसी मंगलकामना के साथ आलोक-पर्व का अभिनन्दन!

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

—परागकुमार मोदी

पाठकों के पत्र

आपका अगस्त 2008 अंक मिला। इस अंक के सभी फूल सुन्दर और सुवासित मिले। बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की छाया-स्मृति की प्रस्तुति अच्छी लगी। ऐसे-ऐसे प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकारों के व्यक्तित्व से प्रेरणा मिलती है। 'सुव्यवस्थित देवनागरी लिपि के अव्यवस्थित की-बोर्ड' लेखक जगदीश्वर जोहरी के विचार से मैं पूर्णत: सहमत हूँ। देवनागरी लिपि का ध्वन्यात्मक उच्चारण जैसा होता है, वैसा यंत्रों में व्याख्यायित नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि यंत्रों में प्रतिपादित ध्वन्यात्मक स्वरूप भरने वाले विद्वानों ने उच्चारण-विज्ञान का सही अध्ययन अभी तक नहीं किया है।

पत्रिका के सभी सोपान सुन्दर हैं। आपने अपने पिता स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी जी की कार्य संस्कृति को अक्षुण्ण बना दिया है, यह देखकर मुझे खुशी होती है। धन्यवाद!

—डॉ० रमेश मोहन शर्मा, भागलपुर, बिहार

'भारतीय वाङ्मय' का अक्टूबर 08 अंक हिन्दी दिवस सम्बन्धी विविध प्रकार के चिन्तनों से लबालब भरा हुआ मिला, अच्छा लगा। पर हिन्दी के प्रति अतिमोह के कारण होगा, या निराशावश होगा, कुछ अतिरंजित उक्तियाँ सत्य को छिपाने वाली हो गई हैं। जैसे—पृष्ठ तीन पर ''इन संस्थाओं ने (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा आदि) पिछले चालीस वर्षों में पुरस्कार बाँटने के अलावा कुछ नहीं किया।''

भारत भारद्वाज जैसे विद्वान से अपेक्षा की जाती है कि वे इन संस्थाओं, जिन्होंने पिछले चालीस वर्षों से हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं विकास तथा पोषण के लिए जो कुछ ठोस कार्य किया है उसका वस्तुनिष्ठ अध्ययन करें और यदि उन्हें अपनी उक्ति में असत्य का आभास मिले तो आगामी किसी अंक में अपनी भूल सुधार लें।

—के०जी० बालकृष्ण पिल्लै
तिरुअनन्तपुम्

'भारतीय वाङ्मय' का अक्टूबर अंक मिला। आपके सम्पादकीय आलेखों की धार बता रही है कि आपका वैचारिक स्तर दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। इनको पढ़कर भी मन तृप्त नहीं हो पा रहा है, इच्छा होती है कि काश, प्रेमचंद युग हुआ होता तो और अधिक पढ़ने को मिलता।

भारत भारद्वाज का आलेख 'कौन ठगवा....' में समस्याओं को रेखांकित करने में पाठकीय रोचकता का विशेष ध्यान रखा गया है। उन्हें कृपया मेरी ओर से बधाई दे दें।

—डॉ० प्रदीप जैन, मुजफ्फरनगर

शुद्ध हिन्दी लिखें

— गगनेन्द्र केडिया

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्याकरण की प्रमुखता समाप्त हो गई है। व्याकरण भाषा की रीढ़ है। यदि व्याकरण की नींव कमजोर होगी तो भाषा का भवन धराशायी हो जाएगा। व्याकरण के अज्ञान के कारण, बोलने और लिखने में, हिन्दी भाषा के साथ जो व्यभिचार हो रहा है, उसके अनगिनत उदाहरण प्रतिदिन समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं तथा अन्य वार्तालाप और लेखन में मिलते रहते हैं। यह अत्यन्त चिन्तनीय एवं शोचनीय है।

कारक

हिन्दी व्याकरण का एक प्रमुख विषय है 'कारक' जो कुल सात होते हैं। यह व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था या रूप है, जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ सम्बन्ध प्रकट होता है। इसका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द के ठीक बाद होना चाहिए। हिन्दी में कारक कुल सात होते हैं, जिनके अलग-अलग चिह्नाक्षर इस प्रकार हैं—

कर्ता—'ने', कर्म—'को', करण—'से', सम्प्रदान—'के लिए' और 'को', अपादान—'से', सम्बन्ध—'का' और अधिकरण—'में' और 'पर'। इनका ज्ञान न होने से कैसी भूलें हो रही हैं, इसका एक उदाहरण देखें जो समाचार पत्रों से लिया गया है :

'ने' (कर्ता) का अशुद्ध प्रयोग

बलराम यादव जो सम्मेलन में भाग लेने दिल्ली गए हैं, ने अपना इस्तीफा पहले ही दे दिया था। यहाँ ने का प्रयोग बलराम यादव के बाद होगा।

'को' (कर्म) का अशुद्ध प्रयोग

अडवाणी ने अनुभव किया कि पाकिस्तान विरोधी भावभंगिमा जिसने मुसलिम विरोधी भावना का रूप ले लिया है को अपनाए रखकर भाजपा आगे नहीं बढ़ सकती। यहाँ को का प्रयोग भावभंगिमा के बाद होगा।

'का' (सम्बन्ध) का अशुद्ध प्रयोग

भारत जो कि सियाचिन से कराकोरम पर निगाह रखता है, का लाभ समाप्त हो जाएगा। यहाँ का भारत के बाद लिखा जाएगा।

'में' (अधिकरण) का अशुद्ध प्रयोग

उ०प्र० जो भाजपा का गढ़ माना जाता था, में भी राजग की दुर्गति हुई। यहाँ में उ०प्र० के बाद लिखा जाएगा।

'के लिए' (सम्प्रदान) का गलत प्रयोग

''वसीम जाफर जो लगातार असफल हो रहे हैं के लिए दल से हट जाना उचित है।'' यहाँ के लिए वसीम जाफर के बाद लिखा जाएगा।

लिंग के अशुद्ध प्रयोग

जनसंघ का गठन जिसने पहले ही निर्वाचन में मान्यता प्राप्त कर लिया था। यहाँ लिया था के स्थान पर ली थी होगा।

रेफ का प्रयोग

र् (रेफ) का भी बहुत अशुद्ध प्रयोग होता है। इसका सर्वप्रचलित उदाहरण है—'आशीर्वाद' को 'आर्शीवाद' लिखना। रेफ 'वा' पर होगा 'शी' पर नहीं। इसी प्रकार 'अर्पण' का 'अपर्ण', 'विसर्जन' का 'विसजर्न', 'सर्वोदय' का 'सवोर्दय' आदि अनेकानेक उदाहरण हैं। जिस अक्षर के बाद आधा 'र' बोलना होगा, उसके बाद वाले अक्षर पर रेफ र् लगेगा।

यही स्थिति व्याकरण के अन्य प्रकरणों की भी है।

कुछ हास्यास्पद उदाहरण

''लालू प्रसाद ने ऐसा करना चाहते हैं।'' इसमें ने नहीं होगा।

''सरकार को समर्थन करेगी।'' सरकार का समर्थन करेगी या सरकार को समर्थन देगी होना चाहिए।

''सरकार को पक्ष में खड़े होना चाहिए।'' खड़ा होना चाहिए होगा क्योंकि सरकार एकवचन है।

बोलचाल की भाषा में हम नित्य कहते हैं 'मेरी भी चाय बना दो'। चाय तो दूध-पानी की बनेगी। हमें बोलना चाहिए 'मेरे लिए भी चाय बना दो।'

इसी प्रकार 'तुम्हारा टेलीफोन आया है' के स्थान पर बोलना चाहिए 'तुम्हारे लिए टेलीफोन आया है।'

हम पूछते हैं 'देखिए खाना कैसा बना है?' इसका उत्तर खाना खाकर दिया जा सकता है, देखकर नहीं। बोलना चाहिए 'खाकर बताइए खाना कैसा बना है?'

'अनेक' एक का बहुवचन है। पर लोग धड़ल्ले से 'अनेकों' का प्रयोग करते हैं। बहुवचन का भी बहुवचन कैसे होगा?

'कृपा' और 'अनुग्रह' का अन्तर कितने लोग जानते हैं? अयाचित अनुकम्पा 'कृपा' होती है। याचना के पश्चात् की गई अनुकम्पा 'अनुग्रह' होती है।

'इष्टदेव' और 'अनिष्टदेव' में क्या अन्तर है? राम, कृष्ण आदि इष्टदेव हैं। ये अप्रसन्न या रुष्ट होने पर भी किसी का अनिष्ट नहीं करते। पर शनी, राहु, केतु आदि ग्रह रुष्ट होने पर अनिष्ट कर देते हैं।

अच्छी हिन्दी

हिन्दी के साथ यह जो कुछ हो रहा है, अच्छा नहीं हो रहा है। हिन्दी-प्रेमियों एवं हिन्दी की संस्थाओं को शुद्ध हिन्दी में बोलचाल एवं लेखन के प्रति ज्ञान एवं जागरूकता उत्पन्न करने के लिए गोष्ठियों एवं जागरण-समारोहों का आयोजन करना चाहिए। यदि शुद्ध हिन्दी के लिए ऐसे प्रयास नहीं किए गए तो यह और भ्रष्ट होती चली जाएगी।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कुछ व्यावहारिक उपाय

दैनन्दिन के प्रयोग में ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनका थोड़ा सा ध्यान रखने से हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में पर्याप्त प्रगति हो सकती है, यथा—

1. नामपट्ट हिन्दी में बनाएँ।
2. कार्यालयों के पत्र व्यवहार की सारी लेखन-सामग्री (स्टेशनरी) हिन्दी में छपाएँ।
3. बैंकों के चेक हिन्दी में लिखें। कम से कम उन पर हस्ताक्षर तो हिन्दी में करें।
4. चलचित्रों एवं दूरदर्शन के धारावाहिकों की नामावली हिन्दी में दिखाएँ।
5. चलचित्रों के नाम हिन्दी में रखें।
6. बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अत्यावश्यक होने पर ही करें। ऐसा ही लेखन में भी करें। अपवादस्वरूप अंग्रेजी शब्दों का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में तो प्रयोग करना ही पड़ेगा, क्योंकि उनका सटीक अनुवाद नहीं हो सकता।
7. नाम जब संक्षेप में लिखें (इनिशियल्स) तो हिन्दी में लिखें। जैसे मुझे जी०के० केडिया न लिखकर ग०कु० केडिया लिखना चाहिए। आरम्भ में कुछ अटपटा लग सकता है। पर निरन्तर प्रयोग करने पर अच्छा लगने लगेगा।
8. बच्चों के साथ या बड़ों के साथ हाय-बाय कहना बन्द करें। अंग्रेजी में शब्द है 'एच आई' जिसका उच्चारण 'हाइ' होगा हिन्दी में अपभ्रष्ट होकर 'हाय' हो गया। लगता है हाय-हाय कर रहे हैं। अंग्रेजी में ही बोलना आवश्यक हो तो 'हाय' से तो 'हेलो' श्रेष्ठ है। गुडमार्निंग के स्थान पर सुप्रभातम, गुड इवनिंग के स्थान पर सुसंध्या एवं गुडनाइट के स्थान पर शुभ रात्रि कहें।
9. हिन्दी लेखन में अंग्रेजी के उद्धरण देवनागरी लिपि में लिखें।
10. हिन्दी के समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं में विज्ञापन हिन्दी में ही दें।
11. हिन्दी कार्यक्रमों के निमंत्रण पत्र हिन्दी में छापें एवं इन कार्यक्रमों में, जिनमें शत-प्रतिशत हिन्दी जानने वाले होते हैं, कार्यक्रम का संचालन भी हिन्दी में ही करें। सम्बन्धित प्रकाशन-सामग्री (लीफलेट, पैम्फलेट, प्लेकार्ड आदि) हिन्दी में ही तैयार करें।
12. हिन्दी चलचित्र एवं दूरदर्शन के पुरस्कार समारोहों का संचालन हिन्दी में ही करें।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा था—''निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल''। पर यह तभी सम्भव है जब हमारे मन में हिन्दी के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न हो और हम भारतेन्दु के उपरोक्त मंत्र को हृदयंगम कर लें। इस कार्य में 60 वर्ष बीत चुके हैं। अब और विलम्ब अपेक्षित नहीं है। सच्चे हिन्दी-प्रेमियों के लिए यह असह्य होना चाहिए और उन्हें बिना और समय नष्ट किए इस दिशा में अविलम्ब सचेष्ट एवं सक्रिय होना चाहिए।

मेरी स्वाधीनता सबकी स्वाधीनता

— अज्ञेय

मैं इंग्लैण्ड में एक उद्यान में घूम रहा था। एक हरी घाटी पार करके एक दूसरी हरियाली के शिखर पर पहुँचते ही मैंने एकाएक सामने देखा—खुली हरियाली में खड़ा एक अकेला पेड़; बस केवल एक पेड़-एक महाकाय वृक्ष, एक ओर धूप सनी हरियाली के बीचों-बीच अपने भव्य अकेलेपन में सीधा खड़ा हुआ महज एक पेड़। लेकिन मुझे इस बोध से रोमांच हो आया। उससे पहले मैंने पेड़ कभी नहीं देखा था—एक पेड़ जो बिना किसी बाधा, बिना किसी क्षति के अपने सम्पूर्ण परिपक्व विकास की चोटी तक पहुँचा हो।

इस वृक्ष की शाखाओं और फुनगियों को उसकी किशोरावस्था में गाय-बकरियों ने कुतरा नहीं था। उसकी डालियों से भोर के सैलानियों ने दंतवनें नहीं बनायी थीं। लकड़हारों ने ईंधन के लिए उसकी डालें नहीं काटी थीं। न ही सड़क या बिजली-मजदूरों ने सड़क की सीध या बिजली के तारों के लिए उसकी कपाल-क्रिया की थी। ...एक पेड़-केवल एक पेड़-लेकिन उसे वह आकार पा लेने दिया गया था, जो प्रकृति ने उसके लिए आयोजित किया था। एक वृक्ष जो अपने आत्यंतिक वृक्षत्व की चरम सम्भावनाएँ प्राप्त कर चुका था।

भारत में हमलोग हर बढ़ती, विकसित चीज के लिए सम्मान का आदर्श बघारते हैं, पेड़-पौधों की पूजा करते हैं। लेकिन भारत में कदाचित ही कभी ऐसा पेड़ देखने को मिलता है, जिसे स्वाधीन बढ़ने दिया गया हो। मैं ठिठककर बहुत देर तक उस पेड़ की ओर ताकता रहा। इतना निश्चल होकर मानो स्वयं मैंने वहाँ जड़ें डाल दी हों। उस समय कोई शब्द मेरे मन में नहीं मँडराये। लेकिन एक शब्दहीन विचार वहाँ गूँजता रहा—स्वाधीन, विकास, स्वाधीनता में विकास, स्वाधीनता की ओर विकास, अपनी चरम सम्भावनाओं की सम्पूर्ण उपलब्धि....।

अनंतर मैं किसी तरह वहाँ से हट आया। कह सकता हूँ कि मैं एक विशेष अर्थ में उस पेड़ को अपने साथ लेता आया और तब से वह सर्वदा मेरे समक्ष रहा है और मेरे भीतर पनपता रहा है। यह बात अगर बहुत अधिक काव्यमय अथवा रूपकमय जान पड़ती है, तो इसके बदले यह कहूँ कि वहाँ से स्वाधीनता की एक परिभाषा मुझे मिली जो तब से सर्वदा मेरे साथ रही है। स्वाधीन होना अपनी चरम सम्भावनाओं की सम्पूर्ण उपलब्धि के शिखर तक विकसित होना है।

लेकिन पेड़ से ऐसी समझ लेकर चले आना-पेड़ को साथ लेते हुए चले आना-आसान काम नहीं है और यह बोझ धारण किये रहना भी आसान नहीं। क्योंकि पेड़ को साथ ले आने का मतलब है एक बहुत बड़ा बोझ और एक उत्तरदायित्व साथ ले आना। कई बार मैंने अपने भीतर उस पेड़ को पनपकर फैलते हुए अनुभव किया है और उस अनुभव का दबाव और तनाव कभी-कभी असह्य जान पड़ा है; क्योंकि उस महावृक्ष का वाहन होने का अर्थ है उस असंख्य बौने और बुच्चे पेड़ों के जंगल के एक धधकते हुए बोध से छटपटाना, जिनसे हम निरन्तर घिरे रहते हैं, जिन्हें निरन्तर अपने आस-पास देखते हुए कोई अपने से ही यह पूछने को लाचार हो जाता है—''तब क्या मैं स्वाधीन हूँ? क्या कोई अकेला स्वाधीन हो सकता है?''

क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण सम्भावनाओं को ऐसे ही परिवेश में पा सकता है, जिसमें दूसरे भी अपनी चरम सम्भावनाओं को पूरी तरह प्राप्त करने के लिए समान रूप से स्वाधीन हों। और ठीक यहीं पर स्वाधीनता का ऐसा बोध मानों तपस्या की यंत्रण बन जाता है, क्योंकि वह मानव-मात्र की समान स्वाधीनता के प्रयत्न की अनिवार्यता बन जाता है।

किसी ने कहा है—''मानव स्वाधीन जन्म लेता है, लेकिन सर्वत्र बन्धनों में जीवन बिताता है।'' यह भी कहा जा सकता है कि मानव करुणा-सम्पन्न प्राणी है, लेकिन सर्वत्र ऐसे समाज में जीता है जो निष्करुण और अन्यायपूर्ण है। यह भी कहा जा सकता है कि मानव मूल्यों का स्रष्टा है, लेकिन प्रतिदिन मूल्य मात्र को पैरों तले रौंदा जाता देखने को बाध्य है। इस प्रकार स्वाधीनता एक सुविधा अथवा विलास की वस्तु न रहकर युयुत्सा बन जाती है। जो एक बार उसका अनुभव करता है, वह सनातन काल तक उसके लिए संघर्ष करने को बाध्य हो जाता है।

किशोरावस्था में मेरे विचार एक ऐसे युग में से गुजरे, जिसमें मैं समझता था कि करुणा-सम्पन्न होना एक झंझट मोल लेना है; क्योंकि करुणा से व्यक्ति की कर्म की स्वाधीनता मर्यादित हो जाती है या उतना नहीं तो कम से कम इतना अवश्य कि जिस व्यक्ति को युद्ध लड़ना है, उसके लिए करुणा एक मुसीबत ही होती होगी। आज जो जानता हूँ, वह इससे कुछ भिन्न है; और मैं आशा करता हूँ कि आज जो जानता हूँ वह अधिक सत्य है। करुणा-रहित योद्धा केवल स्वयं आततायी हो सकता है, या आततायी का उपकरण हो सकता है। स्वाधीनता के योद्धा को सबसे पहले एक करुणा-सम्पन्न स्वाधीन कर्मी होना होगा, जो दूसरे की स्वाधीनता के लिए अपनी स्वाधीनता का बलिदान करने को सदैव प्रस्तुत है। स्वाधीनता की सच्ची कसौटी 'मैं' नहीं 'ममेतर' है। 'ममेतर' के दर्पण में ही मुझे मेरी अपनी अस्मिता का सच्चा प्रतिबिम्ब दिख सकता है। शायद मसीही धर्मग्रन्थ में जब यह कहा गया कि ईश्वर ने अपनी प्रतिच्छवि में मानव को बनाया तब आशय यही था कि ईश्वर को पहचानने के लिए उस प्रतिच्छवि की जरूरत महसूस हुई।

स्मृति-शेष

शायर जमाली का निधन

उर्दू अदब के प्रख्यात शायर 65 वर्षीय **सैय्यद नजरुल हसनैन 'शायर जमाली'** का 19 अक्टूबर को निधन हो गया। 15 जून 1943 को जन्मे बहराइच जनपद के नानपारा कस्बे के मूल निवासी 1964-65 में जौनपुर आ गये तो फिर यहीं के होकर रह गये। यहीं से उन्होंने शायरी करना शुरू किया। शायर जमाली को राज्य सरकार के उर्दू एकेडमी एवार्ड के अलावा पूर्वांचल विश्वविद्यालय द्वारा भी पूर्वांचल रत्न एवार्ड से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त कई अन्य पुरस्कार भी उन्हें मिले। शायर जमाली ने उर्दू में तीन पुस्तकें 'कर्ब', 'सहीफा' और 'लहजा' लिखी थीं।

क्रांतिकारी कवि वेणुगोपाल का निधन

हैदराबाद। हिन्दी के प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि **वेणुगोपाल** का 1 सितम्बर को निधन हो गया। 22 अक्टूबर, 1942 को आंध्र प्रदेश के करीमनगर के एक पुजारी परिवार में जन्मे वेणुगोपाल का मूल नाम नंद किशोर शर्मा था और वह देश में नक्सलवादी आंदोलन से उभरे हिन्दी के प्रमुख क्रांतिकारी कवियों में से थे। वेणुगोपाल के तीन कविता संग्रह—'वे हाथ होते', 'हवाएँ चुप नहीं रहतीं' और 'चट्टानों का जलगीत' प्रकाशित हुए थे।

राम अवतार गुप्ता का निधन

वरिष्ठ पत्रकार और हिन्दी दैनिक पत्र 'सन्मार्ग' के प्रधान सम्पादक रहे 85 वर्षीय **रामअवतार गुप्ता** का 23 सितम्बर को निधन हो गया। उन्होंने सन्मार्ग के द्वारा पश्चिम बंगाल में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके निधन से स्वाधीनता आन्दोलन के दौर के पत्रकारों की पुरानी पीढ़ी का अवसान हो गया।

जयपाल तरंग का निधन

देहरादून में वरिष्ठ लेखक **डॉ० जयपाल तरंग** का 79 वर्ष की आयु में 2 सितम्बर को निधन हो गया। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं और उन्हें हिन्दी अकादमी के सम्मान सहित अन्य अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त थे। वह अंत समय तक लेखन और समाज सेवा के कार्यों में सक्रिय रहे।

गीतकार जवाहर इंदु नहीं रहे

1 सितम्बर, 2008 को चर्चित गीतकार **श्री जवाहर इंदु** का लखनऊ में निधन हो गया। 30 जून, 1956 को जलालपुर धई, रायबरेली में जनमे इंदु अपने गीतों के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में 'खरा सोना', 'करनी का फल', 'मछली नाची उछल-उछल', 'जिन्दगी के नाम', 'नियतिचक्र', 'माटी', 'मृग कस्तूरी सा कुछ', 'जो नहीं कहा' प्रमुख हैं। वे गीतकार के साथ-साथ कथाकार, उपन्यासकार भी थे।

डॉट कॉम से आगे भी है जहां/इंटरनेट

— पीयूष पांडे

इंटरनेट कॉरपोरेशन फॉर असाइंड नेम्स एंड नंबर यानी आईसीएएनएन ने अरसे पुराने अपने नेटवर्क एड्रेस सिस्टम को डोमेन नेम की बंदिशों से आजाद करने का फैसला किया, तो इंटरनेट की दुनिया में एक नए युग की शुरुआत हो गई। बंदिशें टूटने का अर्थ है कि अब इंटरनेट पर किसी भी नाम का डोमेन लिया जा सकेगा। यानी इंटरनेट की जमीन पर अब कोई किसी भी नाम का घर बुक करा सकता है, और उसे '.कॉम' '.नेट' जैसे डोमेन रूपी मोहल्लों में रहने की मजबूरी नहीं होगी।

पूरी दुनिया में इंटरनेट से जुड़े तमाम अहम मसलों पर नियंत्रण रखनेवाली गैर-सरकारी संस्था आईसीएएनएन के अनुसार, उपलब्ध डोमेन नामों से उपयोक्ताओं की आवश्यकताएँ पूरी करना भविष्य में संभव नहीं था, अत: यह कदम आवश्यक था। दरअसल, 1980 की शुरुआत में सबसे पहले इंटरनेट पर वेब पते का ढाँचा तैयार किया गया, तो केवल तीन डोमेन थे—डॉट कॉम, डॉट ईडीयू और डॉट जीओवी। डॉट कॉम व्यावसायिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखनेवाली वेबसाइटों के पतों को निर्धारित करने के लिए था, तो डॉट ईडीयू शैक्षिक और डॉट जीओवी सरकारी साइटों के लिए। धीरे-धीरे इस सूची में कुछ और डोमेन जुड़े। 18 सितम्बर, 1998 को इंटरनेट कॉरपोरेशन फॉर असाइंड नेम्स एंड नंबर के गठन के बाद वेब पते को अधिक सरल-सुगम बनाने के लिए उच्च स्तरीय डोमेन के नामों को '.इन', '.टीवी' और फिर '.बिज', '.इनफो' तक विस्तार किया गया। लेकिन इंटरनेट उपयोक्ताओं और वेबसाइटों की आश्चर्यजनक तेजी से बढ़ती संख्या की वजह से डोमेन नेम की दिक्कत बढ़ती गई। खासकर '.कॉम' वर्ग में। इंटरनेट पर 17 करोड़ से भी अधिक वेबसाइट हैं, जिनमें से करीब साढ़े सात करोड़ '.कॉम' पर खत्म होती हैं। डॉट कॉम की लोकप्रियता ने दूसरे तमाम सफिक्स को दबा दिया। आईसीएएनएन ने 21 सफिक्स मंजूर किए, लेकिन सभी फ्लॉप साबित हुए।

पर अब डॉट बैंक से लेकर डॉट फूट, डॉट ड्रिंक, डॉट दिल्ली और डॉट के बाद कोई भी सफिक्स खरीदा जा सकता है। अंग्रेजी के अलावा 15 भाषाओं में भी नए डोमेन बुक कराए जा सकेंगे। हालांकि इनमें कोई भी भारतीय भाषा शामिल नहीं है और डॉट के बाद का सफिक्स फिलहाल अंग्रेजी में ही होगा। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि पसंदीदा डोमेन के तहत बड़े संस्थान, कम्पनियाँ आदि अपने ब्रांड अथवा सेवाओं का प्रचार इंटरनेट पर सुगमता से कर सकेंगी। सर्च इंजन पर ज्यादातर खोजें 'की-वर्ड' के अन्तर्गत की जाती हैं, और डोमेन में ही की वर्ड होने का लाभ मिल सकता है। फिर, बड़ी कम्पनियाँ अपने ब्रांड के प्रचार के लिए भी अपने नाम का डोमेन चाहेंगी, जिसकी छत्रछाया में वे अपनी दूसरी कम्पनियों को भी प्रचारित कर सकें। दरअसल, कहीं-न-कहीं यह कदम उन बड़े संस्थानों की शिकायत दूर करने से भी जुड़ा है, जिनका तर्क है कि इंटरनेट के जरिये तमाम व्यावसायिक गतिविधियाँ संचालित करने के बावजूद उन्हें पसंदीदा डोमेन नहीं मिलता, जिससे उनके हित प्रभावित होते हैं।

> भविष्य में इंटरनेट पर वेबसाइटें बंधे-बंधाये (जैसे डॉट कॉम, डॉट नेट आदि) नामों की बाध्यता से मुक्त होंगी। इसकी आलोचना भी स्वाभाविक ही है, किन्तु इंटरनेट की दुनिया में यह ऐतिहासिक कदम होगा।

इंटरनेट की दुनिया में नए नाम 2010 से दिख सकते हैं। हालांकि पहले चरण में बड़े रजिस्ट्रार ही नए टॉप लेवल डोमेन को हथियाने के लिए बोली लगाएंगे, क्योंकि आईसीएएनएन द्वारा इन खास डोमेन की कीमत एक से पाँच लाख डॉलर के बीच रखे जाने के आसार हैं। बाद में ये रजिस्ट्रार अपने डोमेन को आम उपयोक्ताओं को बेचने के लिए रख सकते हैं। आईसीएएनएन के मुताबिक इस पूरी प्रक्रिया को निपटाने में दो करोड़ डॉलर खर्च होंगे, जिसे वह आवेदन शुल्क के तौर पर वसूलेगा। इंटरनेट की दुनिया के कई बड़े खिलाड़ी काफी वक्त से इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके लिए वर्चुअल दुनिया में अपना खोमचा गाड़ना फायदे का सौदा साबित होगा। नए नामों के बीच उपयोक्ताओं के इंटरनेट पर वेबसाइट देखने के अंदाज में भी बदलाव आएगा। भविष्य में अब नामों की संख्या को लेकर बवाल खत्म हो सकता है।

आईसीएएनएन का यह कदम ऐतिहासिक तो है, लेकिन कई सवाल भी खड़े हुए हैं। कुछ जानकारों का तर्क है कि वेब एड्रेस की कमी की बात गलत है, क्योंकि डॉट कॉम डोमेन के तहत अभी काफी नामों की गुंजाइश है। उनके मुताबिक, आईसीएएनएन ने कई बड़ी कम्पनियों और व्यावसायिक समूहों को सन्तुष्ट करने और मोटी कमाई के लिए यह कदम उठाया है। इसका अर्थ है कि आईसीएएनएन नए डोमेन के इस खेल में खरबों रुपये पीट सकता है। आशंका यह भी है कि डोमेन नाम खरीदने-बेचने वाली कम्पनियाँ दलालों के जरिये बड़े ब्रांड अपने नाम कर इस खेल में वारे-न्यारे कर सकती हैं। डर यह भी है कि इंटरनेट की दुनिया के सफेदपोश अपराधी कहीं बड़ी कम्पनियों, संगठनों या सरकारों के नाम से मिलते जुलते नाम लेकर उपयोक्ताओं को चूना न लगा दें।

बहरहाल वर्चुअल दुनिया में होने वाली सही हलचल का पता तभी चलेगा, जब यह कवायद पूरी हो जाएगी। वैसे, एक क्रांति तब भी होगी, जब डॉट कॉम, डॉट नेट आदि की तरह नए डोमेन भी 500-1000 रुपये में मिलने शुरू होंगे। सही मायने में साधारण लोगों को तो उसी वक्त का इंतजार रहेगा, क्योंकि तभी मोहल्ले के कल्लू चाय वाले के लिए अपनी साइट का नाम कल्लूचायवालाडॉटटी रखना सम्भव होगा।

कम्प्यूटर की मेमोरी क्षमता होगी लाजवाब

निकट भविष्य में आपके कम्प्यूटर की मेमोरी क्षमता निश्चित तौर पर लाजवाब हो जाएगी। विश्व की दिग्गज कम्पनी आईबीएम ने 'रेसट्रैक' नामक एक ऐसा नया उपकरण बनाने की घोषणा की है जिससे कम्प्यूटर की मेमोरी को बढ़ाना सम्भव हो जाएगा। कम्पनी का कहना है कि इस नए उपकरण के जरिए कम्प्यूटर की मेमोरी क्षमता सौ गुना बढ़ाई जा सकती है।

आईबीएम के कैलीफोर्निया स्थित शोध संस्थान के प्रमुख स्टूवर्ट पार्किन ने कहा, 'बाजार में उपलब्ध सभी तकनीकों के मुकाबले इस उपकरण की कीमत बहुत कम है। यही नहीं, एक बार चार्ज कर देने पर यह सप्ताह भर चलेगा। इस उपकरण में इतने अधिक आँकड़ें इकट्ठा किए जा सकेंगे जिसकी किसी ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।'

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

साहित्यकार सन्दर्भ कोश का प्रकाशन

'हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ कोश' के अब तक दो भाग प्रकाशित हुए हैं। अब इसका तीसरा भाग प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है। इस कोश में सम्मिलित होने के लिए साहित्यकारों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जा रहा है।

साहित्यकारों से आग्रह है कि वे अपना परिचय—नाम, जन्मतिथि व जन्मस्थान, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, प्रकाशित कृतियाँ, पुरस्कार-सम्मान, पता, दूरभाष, ई-मेल आदि विवरण के साथ अपना नवीनतम छायाचित्र शीघ्र प्रेषित करें। छायाचित्र के पीछे अपना नाम तथा शहर का नाम अवश्य लिखें। परिचय-विवरण निम्न पते पर प्रेषित करें—हिन्दी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर-246701 (उ०प्र०)

शोध-सन्दर्भ-5 शीघ्र प्रकाशित होगा

शोध के आरम्भकाल से 2003 तक सम्पन्न शोधकार्यों की वर्गीकृत सूची 'शोध सन्दर्भ' के चार भागों में प्रकाशित की जा चुकी है। इस शृंखला को आगे बढ़ाते हुए 'शोध सन्दर्भ-5' के प्रकाशन की योजना बनाई गई है।

शोध-निर्देशकों एवं शोध-उपाधिधारकों से आग्रह है कि वे इस आयोजन में सहयोग करें। शोध-निदेशक तथा शोध-उपाधि प्राप्तकर्ता निम्न क्रम में अपना विवरण प्रेषित करें—उपाधि प्राप्तकर्ता का नाम, जन्मतिथि, शोध का विषय, विश्वविद्यालय का नाम, उपाधि वर्ष, निदेशक का नाम व पता, प्रकाशन विवरण (यदि शोध-प्रबन्ध प्रकाशित हो गया है), प्रकाशन के बाद शीर्षक, प्रकाशक का नाम व पता, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या, मूल्य तथा अपना पता आदि। यह विवरण हिन्दी साहित्य निकेतन 16 साहित्य विहार, बिजनौर-246701 (उ०प्र०) के पते पर प्रेषित करें। ग्रन्थ में सम्मिलित होने के लिए किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं है।

चेन्नई के निकट
फिशरी यूनिवर्सिटी बनाएगा टाटा

टाटा समूह ने हाल ही में घोषणा की कि उसने चेन्नई के निकट फिशरी इंस्टीट्यूट की स्थापना के लिए तमिलनाडु सरकार से हाथ मिलाया है। फिशरीज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड ट्रेनिंग के लिए राज्य सरकार ने मुत्तूकुंडू में 1.16 एकड़ जमीन बिना कोई रुपया लिए दी है। इस सम्बन्ध में राज्य सरकार और टाटा समूह के बीच एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हुए। टाटा समूह घरेलू और विदेशी मदद से फिशिंग की बेहतर तकनीक, पकड़ी गई मछलियों को रखने की व्यवस्था, मछली पालन और सी फूड से जुड़ी अन्य गतिविधियों के लिए ब्लू प्रिंट तैयार करेगा।

शर्म की बात है विदेशी भाषा बोलना

हिन्दू विश्वविद्यालय में एक भाषण के दौरान महात्मा गांधी ने कहा कि, ''मैं कहना यह चाहता हूँ कि मुझे आज इस पवित्र नगर में इस महान विद्यापीठ के प्रांगण में अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड़ रहा है। यह बड़ी अप्रतिष्ठा और शर्म की बात है। मुझे आशा है कि इस विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाएगा। यदि आप मुझसे यह कहें कि हमारी भाषाओं में उत्तम विचार अभिव्यक्त किए ही नहीं जा सकते तब तो हमारा संसार से उठ जाना ही अच्छा है।''

बच्चों की पुस्तक लांच करेंगे बेकहम

इंग्लैण्ड के फुटबॉल खिलाड़ी डेविड बेकहम फुटबॉल की लोकप्रियता बढ़ाने की कोशिशों के तहत लंदन में फुटबॉल अकादमी खोलने के बाद अब बच्चों को प्रेरित करने के लिए एक पुस्तक शृंखला लांच करने में रुचि दिखा रहे हैं। शृंखला की पहली पुस्तक जून 2009 में बाजार में आएगी। हालांकि इस पुस्तक का शीर्षक अभी तय नहीं है।

अब आई०आई०टी० बनेंगे विश्वविद्यालय

देश में उच्च शिक्षा की समीक्षा करने के उद्देश्य से गठित एक केन्द्रीय समिति, अब देश के सर्वोच्च इंजीनियरिंग संस्थान आई०आई०टी० को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाना चाहती है। यशपाल, भौतिक शास्त्री कमेटी के चेयरमैन ने बताया कि आई०आई०टी० संस्थानों को आज विश्वविद्यालय में परिवर्तित करने की जरूरत है। ऐसे कदम उठाकर संस्थानों के अनुसंधान कार्यों के स्तर में सुधार किया जा सकता है, जो कि आज के विकसित विश्व के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों से काफी पीछे हैं। उन्होंने कहा कि आज आई०आई०टी० संस्थान अण्डरग्रेजुएट फैक्ट्री के रूप में जाना जाता है। इस छवि को बदलने की आवश्यकता है। इसके तहत हम संस्थान को एक विश्वविद्यालय में परिवर्तित करें, यह एक उपाय हो सकता है, जिस पर हम गम्भीरता से विचार कर रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू०जी०सी०) के भी चेयरमैन रह चुके यशपाल ने कहा कि वे इस प्रस्ताव का समर्थन भी करते हैं।

एक कोचिंग ऐसी भी
नेता बनाने को लगती है क्लास

बेंगलूर। सुनने में यह बात अजीब भले ही लगे लेकिन सच है। यहाँ एक संस्थान ऐसा भी है जो युवाओं को राजनीति में अपना करिअर बनाने में मदद करता है। कक्षाएँ सिर्फ रविवार को आयोजित की जाती हैं। तीन महीने के कोर्स का शुल्क पाँच हजार रुपये है। कोर्स पाठ्यक्रम बेंगलूर विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने तैयार किया है।

गेस्ट लेक्चरर के रूप में राजनीतिज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। फिलहाल यहाँ 35 विद्यार्थी हैं। संस्थान के प्रवर्तकों में एक जीबी राजू ने बताया कि हम छात्रों को नेताओं की तरह कपड़े पहनने, बाल सँवारने, यहाँ तक कि दाढ़ी की नवीनतम स्टाइल से परिचित कराते हैं। उन्हें मंच पर भाषण देने की कला में भी पारंगत बनाया जाता है। उन्होंने बताया कि कोर्स के दौरान छात्रों को न सिर्फ इतिहास, कानून और राजनीतिक विज्ञान पढ़ाया जाएगा, बल्कि नेताओं के हाव भाव और उनके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं से भी परिचित कराया जाएगा।

श्री विभूतिनारायण राय ने महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति का पदभार सँभाला

वर्धा। जाने-माने साहित्यकार तथा उत्तर प्रदेश के लखनऊ में पुलिस महानिदेशक पद पर रहे श्री विभूतिनारायण राय ने दिनांक 29 अक्टूबर को महाराष्ट्र राज्य के वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

ज्ञात हो कि विगत 19 अप्रैल को पूर्व कुलपति प्रो० जी० गोपीनाथन सेवानिवृत्त हो गये थे। उनके सेवानिवृत्त होने के पश्चात विश्वविद्यालय के प्रो० आत्मप्रकाश श्रीवास्तव कार्यकारी कुलपति के रूप में कार्यरत थे।

श्री विभूतिनारायण राय ने शोध ग्रन्थ, लेख संग्रह, उपन्यास एवं व्यंग्य-संग्रह आदि रचनाओं से साहित्य जगत में अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज करायी है। उन्होंने 'शहर में कर्फ्यू', 'साम्प्रदायिक दंगे और भारतीय पुलिस', 'घर' आदि रचनाओं के माध्यम से साहित्य जगत में एक अलग पहचान कायम की है। उनके 'तबादला' उपन्यास को लन्दन का प्रतिष्ठित इंदु शर्मा अन्तरराष्ट्रीय कथा सम्मान प्राप्त हुआ है। एक अन्य उपन्यास 'किस्सा लोकतंत्र' को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का सम्मान मिला है। वे विगत 18 वर्षों से 'वर्तमान साहित्य' नामक पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं। इस साहित्यिक पत्रिका के वे संस्थापक सम्पादक हैं। उन्होंने आजमगढ़ के पास अपने पैतृक गाँव जोकहरा में सन् 1933 में श्री रामानन्द सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की है।

भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता को मिले नए निदेशक

प्रख्यात आलोचक और कवि डॉ० विजय बहादुर सिंह ने 16 अक्टूबर 2008 से भारतीय भाषा परिषद में निदेशक के पद का कार्यभार सँभाल लिया है। 'नागार्जुन का रचना संसार', 'नागार्जुन संवाद', 'कविता और संवेदना', आदि

पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

[बी०जे०, बी०ए०, एम०जे०, एम०ए०, एम०फिल० तथा शोधार्थियों हेतु]

सम्पूर्ण पत्रकारिता

डॉ० अर्जुन तिवारी

पृष्ठ : 488 **द्वितीय संस्करण :** 2007

दस खण्डों में विभाजित इस पुस्तक में छियालिस अध्याय हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंग-प्रत्यंग के विवेचन द्वारा जन-सेवा, समाज-सुधार, नवोन्मेष एवं कलात्मक अभिरुचि के साथ ज्ञान-विस्तार वाली पत्रकारिता का इनमें अनुशीलन किया गया है। संचार क्रान्ति के इस दौर में तीव्र वैचारिकता का प्रतिफलन ही पत्रकारिता है। आंगिक, मौखिक, लिखित, मुद्रित, दूरसंचार, साइबर लहरों ने सूचना-समृद्ध और सूचना-दरिद्र इन दो वर्गों में विश्व को विभाजित कर दिया है। दूरभाष, इंटरनेट, मोबाइल जैसे वैयक्तिक सूचना प्रणाली के साथ रेडियो, टीवी तथा मुद्रित माध्यमों के द्वारा संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व, असाधारण एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन परिलक्षित हैं जिनमें असीम विश्व, सीमित ग्राम बन चुका है।

मूल्य : सजिल्द : **400.00** ISBN : 81-7124-411-4
अजिल्द : **280.00** ISBN : 81-7124-412-2

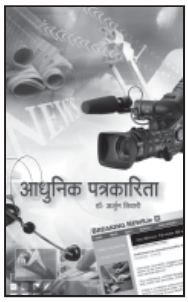

आधुनिक पत्रकारिता

डॉ० अर्जुन तिवारी

पृष्ठ : 332 **संशोधित तथा परिवर्धित पंचम संस्करण :** 2008

अत्याधुनिक संचार साधनों के विपुल विकास के चलते पत्रकारिता के सम्यक् प्रशिक्षण और उसके अनुसंधान की अपरिहार्यता है। इस दिशा में सबसे बड़ी कठिनाई अद्यतन तथ्यों से परिपूर्ण पुस्तकों का अभाव है। इस पुस्तक में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की समस्त विधाओं की सोदाहरण जानकारी प्रस्तुत की गयी है। समाचार-संकलन-लेखन-सम्पादन संदर्भित सभी नूतनतम तथ्यों को मनोरम ढंग से उपस्थापित किया गया है। संचार-क्रान्ति के इस युग में 'सूचना का अधिकार', 'स्टिंग आपरेशन', 'ब्लागिंग', 'सम्पादक सत्ता का ह्रास एवं प्रबंधन के उत्कर्ष' पर दुर्लभ सामग्री प्रस्तुत कर ग्रंथ को अत्याधुनिक एवं उपादेय बनाया गया है।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 978-81-7124-649-6
अजिल्द : **150.00** ISBN : 978-81-7124-650-2

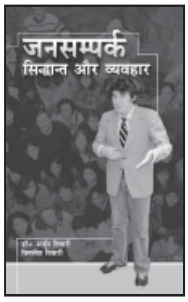

जनसम्पर्क : सिद्धान्त और व्यवहार

डॉ० अर्जुन तिवारी व विमलेश तिवारी

पृष्ठ : 340 **प्रथम संस्करण :** 2007

जनसम्पर्क छवि निर्माण की इञ्जीनियरिंग है तथा जनमत को अपने पक्ष में करने की एक मनोहारी कला है। शासन, उद्योग, वित्त, शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में कार्यरत संस्थान अपनी पारदर्शिता तथा प्रामाणिकता प्रस्तुत करने के लिए जनसम्पर्क जैसे सशक्त एवं प्रभावकारी माध्यम अपनाते हैं। जनसंचार एवं पत्रकारिता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विधा जनसम्पर्क ही है जिसके अध्ययन-अध्यापन हेतु ग्रंथ अपरिहार्य हो चुके हैं।

जनसंचार, जनसम्पर्क, जनमत, प्रचार तथा विज्ञापन की विविध अवधारणा, उनके तौर-तरीके, संस्थान प्रबंधन, ईवेंट प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, गृह पत्रिका प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं पर सोदाहरण तथ्यों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य : सजिल्द : **300.00** ISBN : 978-81-7124-561-1
अजिल्द : **200.00** ISBN : 978-81-7124-562-8

प्रेस विधि

डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा

पृष्ठ : 344 **षष्ठ संस्करण :** 2009

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी में ऐसी प्रथम कृति है जिसमें उन सभी संवैधानिक और विधिक संधारणाओं, मान्यताओं, अधिनियमों और उनकी व्याख्याओं को एक स्थान पर और एकीकृत रूप में लिपिबद्ध किया गया है जो प्रेस पर लागू होती हैं। यह एक क्लिष्ट तकनीकी विषय है लेकिन इसका प्रस्तुतीकरण इस तरह से करने का प्रयास किया गया है कि यह बोझिल न हो और सामान्य पाठक भी इसे समझ सकें, क्योंकि प्रेस से उनका अपना लोकतांत्रिक हित जुड़ा है। यह उल्लेखनीय है कि एकमात्र प्रेस से सम्बद्ध कानून गिने-चुने ही हैं। अधिसंख्य अधिनियम और कानूनी उपबन्ध ऐसे हैं जो प्रेस समेत सब पर लागू होते हैं। इनसे हर नागरिक के वाक् और अभिव्यक्ति, तथा वृत्ति की स्वतंत्रता के अधिकार प्रभावित होते हैं। इसलिए उसके लिए भी इन्हें जानना उपयोगी है।

मूल्य : सजिल्द : **150.00** ISBN : 978-81-7124-679-3
अजिल्द : **100.00** ISBN : 978-81-7124-544-4

रेडियो का कला पक्ष

डॉ० नीरजा माधव

पृष्ठ : 112 **प्रथम संस्करण :** 2006

रेडियो ने रंगमंचीय दृश्य श्रव्य साहित्यिक विधा को केवल श्रव्य बनाते हुए इसकी अभिव्यक्ति में नये प्राण फूँके। अदृश्य अन्धेरा ही इसका रंगमंच होता है। ध्वनि के माध्यम से यह श्रोताओं की कल्पना को उद्‌भूत करता है और वह अपने मानस में ध्वनि के आधार पर एक लोक का सृजन करता है। संगीत और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से दिव्य दृश्यों जैसे स्वर्ग, नक्षत्र, अतीत के वैभवशाली चित्र, युद्ध, तूफान, बरसात, बिजली का कड़कना, मोर का बोलना आदि अनेक ऐसे दृश्य होते हैं जिनको बहुत सफलता पूर्वक सजीव ढंग से श्रोताओं की मन की आँखों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है।

रेडियो नाटक की एक भावपूर्ण अभिव्यक्ति—'हाँ, यह स्वप्न नहीं सत्य है। इन खण्डहरों पर से आज धुँधले वर्षों के कुहरे का पर्दा उठ रहा है, उठता जा रहा है। वर्तमान अन्धकार की भाँति अलग सिमटता जाता है, और आज की उज्जयिनी युगों पूर्व की अवन्तिका बन रही है। वही राजमहल, वही वैभव, वही नवरत्न। आज की रात वह सारा युग फिर से लौट आया है।'

मूल्य : सजिल्द : **80.00** ISBN : 81-7124-498-X
अजिल्द : **40.00** ISBN : 81-7124-492-0

सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प

श्री विश्वनाथ पाण्डेय

पृष्ठ : 272 **प्रथम संस्करण :** 2005

आज आप मात्र एक छोटे से ट्रान्जिस्टर के माध्यम से क्षणभर में देश और दुनियाँ से जुड़ सकते हैं। रेडियो अगर आपके पास है तो पूरी दुनियाँ आपके पास है। एक निर्जन क्षेत्र में भी आप संसार भर के समाचार सुन सकते हैं, जान सकते हैं। यह अपने आप में एक अनोखा और अद्‌भुत आविष्कार है। विगत वर्षों में इस देश में और विश्वस्तर पर भी रेडियो ने सामाजिक और आर्थिक प्रगति को दिशा दी है। आज के रेडियो को जनमानस की आस्था का प्रतीक और चेतना का संवाहक बनना होगा।

रेडियो प्रसारण के विभिन्न आयाम हैं। माइक्रोफोन से रेडियो (ट्रान्जिस्टर) तक की यात्रा अत्यन्त रोमांचक है। 'एकोऽहं बहुस्याम' का अनुसरण करते हुए रेडियो बहुरूप में प्रकट होता है। अत: इसके विभिन्न अंगों एवं ध्वनि की यात्रा का अध्ययन अपने आप में अत्यन्त आह्लादकारी है।

प्रस्तुत पुस्तक रेडियो के सभी पक्षों का अत्यन्त गहराई से अध्ययन प्रस्तुत करती है और जीवन के लिये सम्प्रेषण की आवश्यकता को भी उजागर करती है।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-408-4

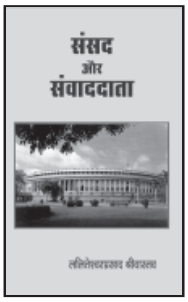

संसद और संवाददाता (संसदीय रिपोर्टिंग)

ललितेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव

पृष्ठ : 128 **प्रथम संस्करण :** 2000

संसदीय रिपोर्टिंग एक विशेषज्ञ कार्य है, जो सांसदों और संवाददाताओं दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण है। सांसद और संवाददाता अपने कर्त्तव्य के निर्वाह में एक दूसरे पर निर्भर हैं। उनमें सहयोग और सद्‌भाव अनिवार्य है। सदन और प्रेस गैलरी में बैठे हुए लोग संसदीय प्रजातंत्र के संवर्धक तथा पोषक हैं। संसद की कार्यप्रणाली तथा संसदीय रिपोर्टिंग पर महत्त्वपूर्ण पुस्तक।

मूल्य : सजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-200-X

समाचार और संवाददाता

काशीनाथ गोविंद जोगलेकर

पृष्ठ : 176 **द्वितीय संस्करण :** 2005

हिन्दी में आमरुचि के विषयों, खासकर साहित्य और पत्रकारिता को लेकर, सहज, सुपाठ्य और व्यावहारिक जानकारियों से भरे लेखन का प्राय: अकाल रहा है। श्री जोगलेकर की यह प्रस्तुति इस शून्य को बखूबी भरती है। सीधे-सादे गद्य वाक्यों में सूक्ष्म, प्रामाणिक तथा सामयिक टिप्पणियाँ किस तरह दी जाएँ, और किन उसूलों, नियमों की तहत, पत्रकारिता के छात्रों के लिए इसकी जानकारी बेहद जरूरी और बुनियादी है। पत्रकारिता का मतलब अपने परिवेश को परखती हुई निगाहों से टटोलना और जटिल ब्योरों को सरल और सहज बना कर बिना उसकी प्रामाणिकता नष्ट किए प्रस्तुत करना है।

मूल्य : अजिल्द : **80.00** ISBN : 81-7124-177-8

संवाद संकलन विज्ञान

नारायण व्यंकटेश दामले

पृष्ठ : 116 **प्रथम संस्करण :** 1997

चुने हुए शब्दों के माध्यम से विचारों को जल्द से जल्द और सहज ढंग से दूसरों तक पहुँचाना समाचार लेखन का ध्येय है।

इस माध्यम के लिए संवाद लेखन के लिए सुव्यवस्थित योजना और सीमित शब्दों की आवश्यकता है। शब्दों का चयन इस ढंग से किया जाय कि पाठकों को शब्दकोश देखने की आवश्यकता न पड़े। संवाद लेखन का कार्य अल्पकाल में ही समाप्त कर लिया जाना चाहिए। यह पुस्तक संवाद संकलन एवं लेखन की दिशा में विद्यार्थी एवं अध्येता को इस विधा के विज्ञान से परिपूर्ण करती है।

मूल्य : अजिल्द : **50.00** ISBN : 81-7124-186-7

हिन्दी पत्रकारिता

भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर-काल तक

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

पृष्ठ : 128 **प्रथम संस्करण :** 2003

हिन्दी भाषा और साहित्य का जो स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से आरम्भ हुआ वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक पूर्णता को प्राप्त हुआ। इस दृष्टि से भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर काल तक का साहित्यिक विकास उस युग की पत्र-पत्रिकाओं में ही देखा जा सकता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम चरण उन्नीसवीं शताब्दी है तो दूसरा चरण बीसवीं शताब्दी के प्रथम पचास वर्ष।

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह ने, जो हिन्दी पत्रकारिता से चार दशकों तक जुड़े थे, पत्रकारिता के उस प्रवहमान स्वरूप को प्रस्तुत किया है।

मूल्य : सजिल्द : **100.00** ISBN : 81-7124-354-1
अजिल्द : **50.00** ISBN : 81-7124-354-1

हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप

बच्चन सिंह

पृष्ठ : 244 **प्रथम संस्करण :** 2003

पत्रकारिता के क्षेत्र में अनन्त सम्भावनाएँ दीख रही हैं। मीडिया विश्व का सशक्त चौथा स्तम्भ माना गया है। इलेक्ट्रॉनिक युग में पत्रकारिता का आन्तरिक और बाह्य दोनों ही क्षेत्रों का स्वरूप निरन्तर बदलता जा रहा है। इसी दृष्टि से अनुभवी पत्रकार लेखक ने पत्रकारिता के विभिन्न विषयों पर नवीनतम जानकारी और सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया है।

पुस्तक में सम्पादकीय विभाग, सम्पादक और उसकी टीम, समाचारपत्र के अवयव, समाचार संकलन, लेखन और सम्पादन, शीर्षक और मेकअप (पृष्ठसज्जा), अनुवाद की समस्या, आधुनिक प्रौद्योगिकी और पत्रकारिता, हिन्दी पत्रकारिता की भाषा, प्रेस परिषद् अधिनियम शीर्षकों के अन्तर्गत पत्रकारिता के व्यावहारिक पक्षों की जानकारी दी गई है।

मूल्य : सजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-330-4

हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान

बच्चन सिंह

पृष्ठ : 112 **प्रथम संस्करण :** 1989

बच्चन सिंह हिन्दी पत्रकारिता के एक सशक्त, सचेतन और गतिशील हस्ताक्षर हैं—पत्रकारिता के ही नहीं साहित्य के भी। साहित्य और पत्रकारिता दोनों को ही नया सन्दर्भ देने और जीवनानुभूत सत्य उद्घाटित करने की कोशिश में लगे हैं वे। उनकी इसी कोशिश का परिणाम है यह पुस्तक जिसमें पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर बेबाक विचार संकलित हैं।

मूल्य : अजिल्द : **40.00** ISBN : 81-7124-022-4

पत्र, पत्रकार और सरकार

काशीनाथ गोविंद जोगलेकर

पृष्ठ : 144 **द्वितीय संस्करण :** 2000

संविधान द्वारा निर्मित कार्यपालिका, विधायिका या न्यायपालिका से आये दिन पत्र और पत्रकार का संघर्ष होता है। वे प्रेस की स्वतंत्रता, सिद्धान्त रूप में स्वीकार करते हैं, पर उसे कार्यरूप में परिणत करने से हिचकिचाते हैं।

'पत्र, पत्रकार और सरकार' में श्री काशीनाथ गोविंद जोगलेकर ने उपर्युक्त सन्दर्भ में पत्र और पत्रकारों का न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका के साथ सम्बन्धों का विश्लेषण किया है।

मूल्य : सजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-064-X

संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता

डॉ० अशोक कुमार शर्मा

पृष्ठ : 148 **प्रथम संस्करण :** 1997

आधुनिक जन-संचार के माध्यमों के अभूतपूर्व विकास ने समसामयिक विश्व को संकुचित कर एक बड़ा-सा गाँव बना दिया है। इस पुस्तक में संचारक्रान्ति के कारण हिन्दी पत्रकारिता पर पड़े प्रभावों को समझाने के लिए विभिन्न समाचारपत्रों के कुछ दृष्टांत दिये गये हैं। ये उदाहरण किसी भी सन्दर्भ को समझाने का प्रयास मात्र ही हैं।

मूल्य : सजिल्द : **300.00** ISBN : 81-7124-175-1
अजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-175-1

पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया

शिवप्रसाद भारती

पृष्ठ : 388 **प्रथम संस्करण :** 1995

हिन्दी के अधिकतर समाचार पत्र असमय ही क्यों बन्द हो जाते हैं? इसी अनसुलझे प्रश्न का उत्तर है प्रस्तुत पुस्तक।

इस पुस्तक में समचार पत्र प्रकाशन की प्रक्रिया प्रारम्भ करने से लेकर सफलतापूर्वक संचालित करने में कौन-कौन से नियमों, अधिनियमों, शासनादेशों का कहाँ, कब और कैसे अनुपालन किया जाना चाहिए? एक सफल समाचार पत्र संचालन में क्या-क्या कठिनाइयाँ आती हैं? उनका कैसे निराकरण किया जा सकता है? कौन-कौन सी सरकारी, गैर सरकारी सुविधाएँ किस विभाग या संस्था से कब और कैसे प्राप्त की जा सकती हैं? इन सब प्रश्नों के उत्तर में औपचारिकताओं को पूर्ण करने के विवरण सहित निर्धारित आवेदन पत्रों के प्रारूप तथा उनसे सम्बन्धित सम्यक् आदेशों, निर्देशों का समावेश भी किया गया है ताकि समाचार पत्र प्रकाशन में आने वाली लगभग हर प्रकार की समस्याओं का निराकरण सम्भव हो सके और निकलने वाले पत्रों का अस्तित्व बना रहे।

मूल्य : सजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-132-8

स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं० दशरथ प्रसाद द्विवेदी

डॉ० अर्जुन तिवारी

पृष्ठ : 160 **प्रथम संस्करण :** 1998

गणेशशंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का अनुसरण करते हुए पं० दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने 'स्वदेश' की राष्ट्रीय पताका गोरखपुर से फहराई जिसने अंग्रेजी शासन को हिलाकर रख दिया। तत्कालीन साहित्यकारों और पत्रकारों ने कलम से आजादी की लड़ाई लड़ी। इस राष्ट्रीय पत्रकारिता के विलुप्त इतिहास का आधिकारिक विवरण इस पुस्तक में है।

मूल्य : सजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-196-4

'स्वदेश' की साहित्य-चेतना

प्रत्यूष दुबे

पृष्ठ : 164 **प्रथम संस्करण :** 2003

स्वाधीनता आन्दोलन तथा हिन्दी के तत्कालीन रचनाकर्म के बीच के अन्योन्य सम्बन्ध को परखने के लिए सरस्वती, माधुरी, मतवाला आदि की तरह 'स्वदेश' के प्रकाशन की भी ऐतिहासिक महत्ता है। उपेक्षित इतिहास का बहुआयामी अनुशीलन किसी भी शोध छात्र के लिए बहुत बड़ी चुनौती के समान होता है। प्रत्यूष दुबे ने इस चुनौती को स्वीकार कर सचमुच में एक सार्थक शोध कार्य किया है।

मूल्य : सजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-339-8

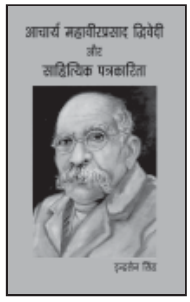

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता

इन्द्रसेन सिंह

पृष्ठ : 136 **प्रथम संस्करण :** 2000

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के भीष्म पितामह थे।

द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' के माध्यम से विविध विधाओं और साहित्यकारों के लेखन को भाषा तथा विषय की दृष्टि से संस्कारित किया। इस पुस्तक में द्विवेदीजी की सम्पादन प्रक्रिया का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया गया है। पत्रकारिता तथा साहित्यकारों के विकासात्मक अध्ययन की दृष्टि से यह पुस्तक सर्वथा उपयोगी है।

मूल्य : सजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-248-0

इतिहास-निर्माता पत्रकार

डॉ० अर्जुन तिवारी

पृष्ठ : 112 **प्रथम संस्करण :** 2000

राष्ट्रप्रेमी, युगपुरुष, युग प्रवर्तक पत्रकार अपने देश-इतिहास के निर्माता हैं जो स्वतंत्रता संग्राम में अपने धैर्य और धर्म से जुड़े रहे तथा जिनकी जवानी आपदाओं को सदैव गले लगाती और हलचल मचाती तथा युगधारा को मोड़ती थी। ऐसे ही मिशनरी पत्रकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को परखकर राष्ट्र अपना गौरव अक्षुण्ण रख सकता है।

'इतिहास निर्माता पत्रकार' इतिहास पुरुष पत्रकारों की आत्मा का प्रेरक तत्त्व है जो आज की पीत, मीत, नवनीत, क्रीत पत्रकारिता के निदान और उपचार की औषधि है। आज के संक्रमण काल में उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के प्रथित पत्रकारों की सदाचार सम्पन्नता, उनकी दृष्टि और नीति ही लोकमंगलकारिणी है जिसके अध्ययन-अध्यापन से हम अपनी कीर्ति-रक्षा कर सकते हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, तिलक, रामानन्द चटर्जी, महामना मदनमोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, महावीरप्रसाद द्विवेदी, गणेशशंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, झाबरमल्ल शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी सदृश तपोपूत प्रकाशपुञ्ज पत्रकारों के पावन प्रेरक प्रसङ्ग राष्ट्रीय अस्मिता और पत्रकारिता के पर्याय हो चुके हैं।

मूल्य : अजिल्द : **60.00** ISBN : 81-7124-246-4

हिन्दी-साहित्य : विविध परिदृश्य

डॉ० सदानन्दप्रसाद गुप्त

पृष्ठ : 164 **प्रथम संस्करण :** 2001

पुस्तक के आरम्भिक चार लेख पत्रकारिता से सम्बन्धित हैं। स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी पत्रकारिता के जीवंत स्वरूप का साक्षात्कार हुआ। सब प्रकार की विपरीत परिस्थितियों के बीच हिन्दी पत्रकारिता ने जिस ध्येयवाद और आत्मोत्सर्ग की भावना का परिचय दिया था, वह आज भी रोमांचित कर देता है। आज जबकि सब तरह की अनुकूलता के बावजूद उस तेजस्विता का अभाव दिखाई देता है, अतीत का अध्ययन प्रेरणाप्रद हो सकता है। अंग्रेजों ने भारतीय इतिहास, साहित्य एवं संस्कृति के अन्वेषण के बहाने उसे विकृत करने का कम प्रयास नहीं किया। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी इस विकृति से हम पूर्णतया मुक्त नहीं हो पाये हैं। उपभोक्तावाद के दौर में आज अपनी संस्कृति, परम्परा, भाषा—सबके प्रति हीनता का भाव है, ऐसे में निबन्ध-साहित्य में भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति व्यक्त निष्ठा महत्त्वपूर्ण है।

मूल्य : सजिल्द : **160.00** ISBN : 81-7124-257-1

THE RISE & GROWTH OF HINDI JOURNALISM (1826-1945)

Dr. Ramratan Bhatnagar

Editor : Dr. Dhirendranath Singh

Page : 572 + 15 (Plate) **Edition :** 2003

The first authentic history of Hindi journalism in English entitled 'The Rise and Growth of Hindi Journalism' was produced by Dr. Ramratan Bhatnagar. The book presents the history of journalism from 1826 to 1945 and formed that Hindi journalism was a part of Hindi literature.

This work become more useful to Hindi Scholars as well as to students of journalism. Since the book has been originally written in English, it is very useful to foreign scholars as well.

Price : H.B. : **800.00** ISBN : 81-7124-327-4

MASS COMMUNICATION AND DEVELOPMENT

Dr. Baldev Raj Gupta

Page : 208 **First Edition :** 1997

The book is a premier contribution to the area of Mass communication and Development with special reference to India.

There is much material on theories and models of communication, types of communication, effect and impact of Mass Communication, science, technology, research and response with relation to development. The book is very useful for Theory and Practice of Communication for development.

Price : H.B. : **250.00** ISBN : 81-7124-170-0

MODERN JOURNALISM AND MASS COMMUNICATION

Dr. Baldev Raj Gupta

Page : 232 **First Edition :** 1997

The book Modern Journalism and Mass Communication, is an excellent, comprehensive survey of the journalism profession and electronic media, including definitions, organisation and functioning of the various departments of different mass media.

Price : H.B. : **250.00** ISBN : 81-7124-171-9

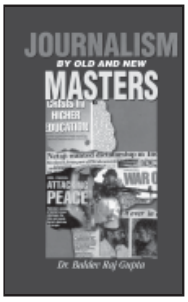

JOURNALISM BY OLD AND NEW MASTERS

Dr. Baldev Raj Gupta

Page : 200 **First Edition :** 1997

Presently Indian Press needs ethics and values of India, system and style from the British and High Technology of America. Yes ! It is the need of the hour.

Those who aspire to be journalists and also those who are already so, normally want to know more about their predecessors who have made journalism and the mass media what they are today.

This volume comprises lectures and articles by some old and new journalists and writers.

The chapters of the book are interesting as well as inspiring for Teachers and Students of Journalism and Mass Communication of Indian Universities.

Price : H.B. : **250.00** ISBN : 81-7124-169-7

उनकी आलोचना पुस्तकें हैं। उनकी काव्य कृतियों में 'मौसम की चिट्ठी', 'पतझड़ की बाँसुरी' आदि तथा आख्यान मूलक कविता 'भीम बैठका' प्रमुख हैं। उन्होंने तीन जाने-माने और चर्चित कृतिकारों (भवानीप्रसाद मिश्र, दुष्यंत कुमार और ख्यातिप्राप्त आलोचक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी) की ग्रन्थावलियों का सम्पादन भी किया है। उनकी अन्य सम्पादित कृतियाँ—'जनकवि', 'लोकप्रिय कवि भवानीप्रसाद मिश्र', 'यारों के यार दुष्यन्त कुमार', 'एक असाधारण गद्य शिल्पी वसंत पोद्दार' आदि हैं। अनेक जाने-पहचाने और चर्चित समकालीनों को लेकर लिखे उनके संस्मरणों के अलावा पिछले दिनों प्रकाशित आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की जीवनी 'आलोचक का स्वदेश' इन दिनों उनकी सबसे चर्चित कृति है।

आज बुक आई है कल बुकर भी ले आना

एक दूसरे ग्रह से कुछ बुरी शक्तियां धरती पर आती हैं और वे धरती के पर्यावरण को नष्ट कर देना चाहती हैं। पाँच लड़कियाँ जो आपस में दोस्त हैं, पृथ्वी के पर्यावरण की रक्षा करती हैं। इसी विषय को लेकर आठवीं कक्षा की छात्रा अस्मिता गोयनका ने 13 वर्ष की उम्र में एक उपन्यास 'द मिस्टिक टेंपल' लिख दिया और रोली बुक्स जैसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति के प्रकाशक ने उसे प्रकाशित करके उसकी मेधा का लोहा मान लिया है। पृथ्वी और पर्यावरण की रक्षा का सवाल जिसे दुनिया भर के नीति-नियंता नहीं समझ पा रहे हैं या समझकर भी नासमझ बने हुए हैं, उस पर एक बच्ची की चिन्ता ने जता दिया है कि इस उम्र में भी उसके सरोकार कितने व्यापक हैं।

18 अप्रैल 1995 को जन्मी अस्मिता को उपन्यास के छपने से पहले ही 5000 रुपये अग्रिम रॉयल्टी के रूप में मिल चुके हैं। किशोर लेखिका की यह उपलब्धि इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि हिन्दी के कई प्रतिष्ठित लेखक अपनी किताब के पूरे संस्करण की रॉयल्टी इतनी भी नहीं पा पाते हैं।

अस्मिता अपनी इस उपलब्धि से खुश तो बहुत है, लेकिन वह इतराती बिलकुल नहीं है। घरवालों को भी इस उपन्यास के बारे में तब पता चला जब उसने इसे आधा लिख लिया था। जब उसने दादा कमल किशोरजी, जो हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार हैं, को दिखाकर पूछा कि कैसा है, तो उन्होंने कहा, इसकी चिन्ता मत करो। जैसा बन रहा है, वैसा ही लिखो। जब इसकी पाण्डुलिपि रोली बुक्स को दी गई तो उन्हें यह उपन्यास इस उम्र के बच्चे की क्षमता से अधिक का लगा। उन्होंने बाकायदा उसका टेस्ट लिया फिर किताब के प्रकाशन की स्वीकृति दी। अस्मिता के परिवार में सब हिन्दी बोलते हैं, इसके बावजूद उसकी अंग्रेजी स्क्रिप्ट देखकर प्रकाशक भी आश्चर्यचकित रह गए। विस्मित कर देने वाली इस प्रतिभा को अनंत शुभकामनाएँ...आज बुक आई है कल बुकर भी ले आओ।

सम्मान-पुरस्कार

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी 'आर्य-विभूषण पुरस्कार' से सम्मानित

पद्मश्री **डॉ० कपिलदेव द्विवेदी** को 'आर्य विभूषण पुरस्कार' राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबुल

ट्रस्ट द्वारा हरियाणा के बीगोपुर में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया। यह सम्मान योग ऋषि स्वामी रामदेवजी ने प्रदान किया। सम्मान में इक्कीस हजार रु०, शाल, श्रीफल, एवं अभिनन्दन पत्र स्वामी रामदेवजी ने प्रदान किया। वेद एवं आर्य समाज के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए पुरस्कार डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के अतिरिक्त राजस्थान के डॉ० भवानीलाल भारतीय, पंजाब के श्री राजेन्द्र जिज्ञासु तथा उत्तराखण्ड के डॉ० महावीर अग्रवाल को भी प्रदान किया गया।

स्वामी रामदेवजी ने अपने उद्‌बोधन में डॉ० कपिलदेव द्विवेदी द्वारा किए गए वैदिक अनुसन्धान की सराहना करते हुए कहा कि वेदों पर डॉ० द्विवेदी द्वारा किया गया कार्य अभूतपूर्व और सराहनीय है। डॉ० द्विवेदी ने वेदामृतम्-ग्रन्थ माला के 40 भागों का प्रकाशन कर वेदों का ज्ञान सभी के लिए उपलब्ध कराया है। डॉ० द्विवेदी की गणना संस्कृत भाषा के सरलीकरण के उन्नायकों में भी की जाती है। डॉ० द्विवेदी ने पूर्व माध्यमिक कक्षाओं से लेकर स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के लिए संस्कृत भाषा एवं व्याकरण पर आधारभूत ग्रन्थों की रचना की है जो न केवल बहुप्रशंसित एवं बहुप्रचलित हैं, बल्कि इन्हें संस्कृत भाषा एवं व्याकरण के मानक ग्रन्थों का स्थान प्राप्त है। डॉ० द्विवेदी के अब तक 70 से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें प्रमुख हैं—संस्कृत शिक्षा भाग-1, 2, 3; प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी, रचनानुवाद कौमुदी, प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी, संस्कृत व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी, अर्थविज्ञान एवं व्याकरण दर्शन, पिंगल कृत छन्दः सूत्रम्, भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, संस्कृत निबन्ध शतकम् आदि। आपने आर्य समाज भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के प्रचारार्थ 5 बार विदेश यात्राएँ की हैं तथा 14 से अधिक देशों में 200 से अधिक व्याख्यान दिए हैं। डॉ० द्विवेदी को प्राप्त पुरस्कारों और सम्मानों की एक लम्बी शृंखला है।

केदार सम्मान-2007

प्रगतिशील हिन्दी कविता के शीर्षस्थ कवि केदारनाथ अग्रवाल की स्मृति में दिया जाने वाला चर्चित 'केदार सम्मान-2007' विगत दिनों बांदा नगर में समकालीन हिन्दी कविता की चर्चित कवयित्री **अनामिका** को उनके कविता संकलन 'खुरदुरी हथेलियाँ' के लिए, प्रख्यात आलोचक डॉ० मैनेजर पाण्डेय द्वारा प्रदान किया गया।

डॉ० पाण्डेय ने कहा 'खुरदुरी हथेलियाँ' की कविताओं में भारतीय समाज एवं जनजीवन में जो हो रहा है और होने की प्रक्रिया में जो कुछ खो रहा है उसकी प्रभावी पहचान और अभिव्यक्ति है। इसलिए केदारनाथ अग्रवाल के वैचारिक मूल्यों के बहुत करीब हैं।

केदार सम्मान के इसी क्रम में डॉ० मैनेजर पाण्डेय द्वारा चर्चित युवा आलोचक जितेन्द्र श्रीवास्तव को डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान से सम्मानित किया गया।

इन दोनों सम्मानों के बाद डॉ० मैनेजर पाण्डेय द्वारा केदार शोध पीठ के सचिव, कवि नरेन्द्र पुण्डरीक द्वारा चयनित व सम्पादित केदारनाथ अग्रवाल की चुनी हुई कविताओं का विमोचन किया गया। इस अवसर पर लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी के चर्चित गजल संग्रह 'इसी शहर में' का विमोचन डॉ० मैनेजर पाण्डेय द्वारा किया गया।

पहले ही उपन्यास से अरविंद को बुकर

अरविंद अडिगा को उनके पहले ही उपन्यास 'द व्हाइट टाइगर' के लिए 2008 का प्रतिष्ठित 'बुकर पुरस्कार' देने की घोषणा की गई है। 'बुकर पुरस्कार' के निर्णायकों के अध्यक्ष माइकल पोर्टिलो ने इस उपन्यास की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह मैकबेथ की परम्परा में शुमार होने वाला एक अत्यन्त रोचक उपन्यास है।

मुंबई निवासी 33 वर्षीय अरविंद तीसरे ऐसे लेखक हैं जिन्हें अपने पहले ही उपन्यास के लिए 50,000 पाउंड राशि वाले इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अरविंद की किताब 'द व्हाइट टाइगर' मुख्यत: समाज में अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती खाई पर आधारित है। यह उपन्यास 'बलराम हलवाई' की दास्तान है जो एक गाँव के सामान्य लड़के से कामयाब व्यवसायी बनने तक का सफर तय करता है। वह सफलता के लिए किसी भी साधन को अपनाना सही समझता है।

बुकर पुरस्कारों की शार्ट लिस्ट में छह लेखक थे। इनमें श्री अडिगा के अलावा भारतीय मूल के अमिताभ घोष, सेबास्टियन बैरी, स्टीव टोल्ट्ज, लिंडा ग्रांट और फिलिप हेनशर थे। इनमें श्री अडिगा सबसे कम उम्र के हैं। उन्होंने आयरलैंड के सेबास्टियन बैरी को पीछे छोड़ते हुए यह पुरस्कार प्राप्त किया। सबसे कम उम्र में बुकर पुरस्कार जीतने वाले वह दूसरे लेखक हैं। इनसे पहले 1991 में बेन ओकरी को 32 वर्ष की उम्र में यह पुरस्कार मिला था। यह पुरस्कार पाने वाले अरविंद पाँचवें भारतीय लेखक हैं। इससे पहले वी०एस० नॉयपाल, सलमान रुश्दी, अरुंधती राय और किरन देसाई को यह सम्मान मिल चुका है।

एशियाई बुकर पुरस्कार की दौड़ में दो भारतीय

राष्ट्रमंडल देशों के नागरिकों को दिए जाने वाले चर्चित बुकर पुरस्कार की घोषणा हो चुकी है। पुरस्कार युवा उपन्यासकार अरविंद अदिगा की झोली में जा चुका है।

अब एशियाई बुकर पुरस्कार के रूप में प्रतिष्ठित मैन ऐशियन लिटरेरी पुरस्कार की घोषणा होने वाली है। खास बात यह है कि इसके पाँच दावेदारों में दो भारतीय सिद्धार्थ धनवंत सांघवी और कावेरी नांबिसन भी हैं। दस हजार अमेरिकी डालर के इस पुरस्कार की घोषणा 13 नवम्बर को हांगकांग में होगी।

आचार्य डॉ० महेश शर्मा को 'राष्ट्रभाषा अलंकरण'

स्वतन्त्रता के पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी द्वारा स्थापित संस्था 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, रायपुर' के तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दी उत्सव समारोह में **डॉ० महेश चन्द्र शर्मा** को राष्ट्रभाषा अलंकरण से सम्मानित किया गया। संस्कृति मन्त्री एवं मुख्य अतिथि श्री बृजमोहन अग्रवाल तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन छत्तीसगढ़ और सम्मान समारोह के अध्यक्ष श्री ललित सुरजन ने शॉल, सम्मानपत्र एवं साहित्य राशि से आचार्य शर्मा को सम्मानित किया।

2008 का कथाक्रम सम्मान मधु कांकरिया को

कथाक्रम समिति के संरक्षक प्रख्यात कथाकार श्रीलाल शुक्ल की अध्यक्षता में वर्ष 2008 का 'आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' चर्चित लेखिका **मधु कांकरिया** को दिये जाने का निर्णय लिया गया है। समिति के अन्य सदस्यों में कथाक्रम संयोजक शैलेन्द्र सागर, वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति, चर्चित समीक्षक सुशील सिद्धार्थ, कथाकार रजनी गुप्त तथा रंगकर्मी राकेश थे।

मधु कांकरिया पिछले लगभग डेढ़ दशक से कथा लेखन में सृजनरत हैं एवं चर्चित युवा लेखिका हैं। उनकी कहानियाँ, लेख, यात्रा वृत्तान्त हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। उनके उपन्यासों में 'खुले गगन के लाल सितारे', 'सलाम आखिरी', 'पत्ताखोर' और अभी हाल में प्रकाशित 'सेज पर संस्कृत' सम्मिलित हैं जो सभी चर्चित रहे हैं। 'अन्तहीन मरूस्थल', 'और अन्त में यीशु', 'बीतते हुए' उनके कहानी संग्रह हैं। उनकी कहानी 'रैना नहीं, देस वीराना है' पर चंडीगढ़ दूरदर्शन द्वारा टेलीफिल्म का निर्माण किया गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रत्येक वर्ष एक प्रतिष्ठित कथाकार को 'आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' प्रदान किया जाता है, जिसके अन्तर्गत 15000/- (पन्द्रह हजार रुपये) की धनराशि तथा सम्मान चिह्न, सम्मान पत्र भेंट किये जाते हैं। विगत् वर्षों में यह सम्मान संजीव, कमलाकान्त त्रिपाठी, चन्द्रकिशोर जायसवाल, मैत्रेयी पुष्पा, दूधनाथ सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, शिवमूर्ति, असगर वजाहत, भगवानदास मोरवाल, उदय प्रकाश व प्रियंवद को दिया जा चुका है।

डॉ० जगमल सिंह को 'साहित्य सारस्वत' सम्मान

पूर्वोत्तर भारत के मणिपुर एवं असम विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद से सेवा निवृत्त साहित्यानुरागी **डॉ० जगमल सिंह** को अहिन्दी भाषी राज्यों में लगभग पैंतीस वर्षों से लगातार सेवा देने एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु कृत-संकल्प रहने के कारण हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने उन्हें सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'साहित्य सारस्वत' से सम्मानित किया।

नागदेव सम्मानित

वरिष्ठ कवि **राजेन्द्र नागदेव** के काव्यसंग्रह 'अंधी यात्राएँ' के लिए 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त मेमोरियल ट्रस्ट, दिल्ली' द्वारा मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार-2008 प्रदान किया गया। अध्यक्षता गिरीश संघी, सांसद राज्यसभा ने की। पुरस्कार स्वरूप उन्हें इकत्तीस हजार रु० की राशि, स्मृति-चिह्न, प्रशस्ति पत्र, शाल आदि भेंट किये गए। नागदेव के अब तक पाँच काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। भारत-एशियाई साहित्य अकादमी, दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य श्री नागदेव को गतवर्ष हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा उनके अन्य काव्यसंग्रह 'चक्रवात-सा घूमता है शून्य' के लिए साहित्यिक कृति सम्मान भी दिया जा चुका है।

प्रेम जनमेजय, सूर्यबाला और नरेन्द्र कोहली को गोइन्का पुरस्कार

कमला गोइन्का फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में फाउंडेशन द्वारा स्थापित सन् 2008 के पुरस्कार प्रदान किए गए। स्नेहलता गोइन्का व्यंग्य भूषण पुरस्कार प्रख्यात व्यंग्यकार **प्रेम जनमेजय** को, रत्नादेवी गोइन्का वाग्देवी सम्मान सुप्रसिद्ध कथाकार **सूर्यबाला** को उनके 'इक्कीस कहानियाँ' शीर्षक कहानी-संग्रह के लिए, गोइन्का व्यंग्य साहित्य सारस्वत सम्मान वरिष्ठ रचनाकार **डॉ० नरेन्द्र कोहली** को प्रदान किया गया।

कृपाशंकर चौबे को पुरस्कार

कोलकाता के पार्क ग्लैक्सी होटल में कैंडिड कम्युनिकेशन तथा श्याम स्टील द्वारा आयोजित एक समारोह में **कृपाशंकर चौबे** को बंगाल के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी पत्रकार का पुरस्कार सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रियरंजन दास मुंशी की उपस्थिति में वाममोर्चा के अध्यक्ष विमान बसु ने प्रदान किया। चौबे दैनिक हिन्दुस्तान के कोलकाता स्थित विशेष संवाददाता हैं।

शीला झुनझुनवाला सम्मानित

नई दिल्ली के श्रीराम सेंटर के सभागार में संगीतिका के जितेन्द्र महाराज फाउंडेशन द्वारा आयोजित आनंद उत्सव समारोह में सुप्रसिद्ध लेखिका **शीला झुनझुनवाला** को लेखन के लिए, शन्नो खुराना को गायन के लिए, स्वप्न सुंदरी को नृत्य के लिए महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ० गिरिजा व्यास तथा दिल्ली के मुख्य सचिव राकेश मेहता ने सम्मानित किया।

ज्ञानपीठ का नवलेखन पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा इस वर्ष का नवलेखन पुरस्कार कविता विधा के लिए संयुक्त रूप से दो कवियों—**रविकांत** को उनकी काव्यकृति 'यात्रा' तथा **उमाशंकर चौधरी** की काव्यकृति 'कहते हैं तब शहंशाह सो रहे थे' के लिए और कहानी विधा के लिए विमल चंद्र पाण्डेय के 'डर' शीर्षक कहानी-संग्रह के लिए दिया जाएगा।

राष्ट्रीय सम्मान हेतु नामांकन

भोपाल, मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा संचालित स्वराज संस्थान संचालनालय ने राष्ट्रीय सम्मान 2008-09 के लिए नामांकन आमंत्रित किए हैं। शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में श्रेष्ठतम उपलब्धियों व योगदान करने वाले साधनारत व्यक्ति या संस्था को महर्षि वेद व्यास राष्ट्रीय सम्मान (सम्मान राशि दो लाख रुपए), सामाजिक सद्भाव, सामाजिक समरसता के क्षेत्र में साधनारत व्यक्ति या संस्था को महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय सम्मान (राशि दो लाख रुपए), स्वाधीनता संग्राम के आदर्शों, राष्ट्रभक्ति और समाजसेवा के सर्वोत्कृष्ट मानदंडों की स्थापना के लिए उच्चकोटि के रचनात्मक अवदान, सृजनात्मक शोधकार्य और विशिष्ट उपलब्धियों के लिए व्यक्ति या संस्था को अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद राष्ट्रीय सम्मान (राशि डेढ़ लाख रुपए) दिया जायेगा।

विशेषज्ञों से सम्मान के लिए अनुशंसाएँ 14 नवंबर, 2008 तक, संचालक, स्वराज संस्थान संचालनालय, रवीन्द्र भवन परिसर, भोपाल-462002 पर पहुँच जानी चाहिए।

फोन : 2660407, फैक्स : 0755-2661926
ई-मेल swarajbhavan@gmail.com

हिन्दी अकादमी साहित्यिक और बाल-साहित्य सम्मान

नई दिल्ली। हिन्दी अकादमी ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लेखकों की वर्ष 2007 में प्रकाशित हिन्दी की मौलिक एवं अपुरस्कृत साहित्यिक तथा बाल एवं किशोर साहित्य कृतियाँ सम्मान के लिए कृतिकारों एवं प्रकाशकों से आमंत्रित की हैं। पुस्तकों के सम्बन्ध में लेखक, साहित्यकार, पत्रकार आदि भी अपनी संस्तुति सहित पुस्तकें भेज सकते हैं। प्रकाशक पुस्तक के लेखक की स्वीकृति भी संलग्न करें। विस्तृत

जानकारी के लिए देखिए वेबसाइट : hindiacademy_delhi@vsnl.net

प्रोफेसर युगल किशोर मिश्र का अभिनन्दन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० पंजाब सिंह ने कहा कि 'कुलपति' आदि तो उपाधि है। सचमुच जो अपने ज्ञान को लोगों के बीच बाँटे, उसे बढ़ाए वही कुलपति है। उक्त विचार उन्होंने रविवार को हनुमानघाट स्थित पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसंधान केन्द्र के वार्षिकोत्सव व जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति **प्रो० युगलकिशोर मिश्र** के अभिनन्दन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के मानद समन्वयक प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने कहा कि प्रो० मिश्र का परिवार तीन पीढ़ियों से वेद विद्या के रक्षार्थ संलग्न है। प्रो० मनुदेव भट्टाचार्य ने कहा कि इन्होंने पारम्परिक रूप से गुरु के सान्निध्य में वेदाध्ययन करके जो स्थान प्राप्त किया है वह अन्य के लिए दुर्लभ है। विशिष्ट अतिथि महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के श्री किशोर मिश्र ने कहा कि अभिनन्दन तो काशीभूमि का वरदान है। सम्मानित अतिथि प्रो० युगलकिशोर ने कहा कि मनुष्य को मिली पद-प्रतिष्ठा, विद्या, गुण सब पूर्वजों का ही पुण्यफल है। समारोह की अध्यक्षता प्रो० आद्याप्रसाद मिश्र ने की। मुख्य अतिथि समेत विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने प्रो० युगलकिशोर मिश्र को अभिनन्दन पत्र व स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका स्वागत किया। श्रीफल अर्पण मणिजी ने किया। मुख्य अतिथि ने शोध पत्रिका 'अनुसंधानवल्लरी' के प्रवेशांक का विमोचन भी किया।

रहमान राही को ज्ञानपीठ पुरस्कार

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह छह नवम्बर को वरिष्ठ कश्मीरी कवि **रहमान राही** को वर्ष 2004 के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान करेंगे। पद्मश्री व साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित **राही** कश्मीरी भाषा के प्रतिष्ठित कवि और आलोचक हैं। 83 वर्षीय कवि को भारतीय साहित्य में उनके योगदान के लिए ज्ञानपीठ से सम्मानित किया जा रहा है। इस पुरस्कार के लिए **राही** के नाम की घोषणा पिछले साल ही कर दी गई थी।

स्वदेश सम्मान समारोह

इस वर्ष **डॉ० त्रिभुवन ओझा** को भारतीय जीवन मूल्यों की स्थापना एवं यशस्विता में 'तदपि कहे बिनु रहा न कोई' साहित्यिक कृति द्वारा योगदान एवं इनके व्यक्तिगत गुणों के आलोक में 'स्वदेश-स्मृति सम्मान' के अन्तर्गत अंगवस्त्रम्, तुलसी भवन प्रतीक, सम्मान पत्र एवं 21,000 रुपये की नकद राशि प्रदान की जायगी। डॉ० ओझा की प्रमुख कृतियाँ हैं—(1) प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन (1987), (2) हिन्दी में अनेकार्थता का अनुशीलन (1994), (3) शुभा (कविता संग्रह) (2005), (4) प्रश्नोत्तरी गीता (प्रकाश्य)।

फ्रांस के ला क्लैजियो को साहित्य का नोबेल पुरस्कार

2008 के साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता **ज्यां मारी गुस्ताव ला क्लैजियो** ऐसे लेखक हैं जो फ्रांस और लातिन अमेरिका के बीच एक सम्पर्क सूत्र हैं। ला क्लैजियो फ्रांसिसी लेखक हैं लेकिन उन्होंने मैक्सिकन इतिहास पर डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने कोलंबस पूर्व अमेरिकी सभ्यताओं पर कई किताबें लिखी हैं। उनका बचपन मॉरीशस में बीता है और उनकी पत्नी मोरक्को की हैं। ला क्लैजियो का परिवार मॉरीशस, फ्रांस और अमेरिका में न्यू मैक्सिको तीनों जगह ही रहता है। लेकिन अपने देश में भी वे बेहद लोकप्रिय हैं और उन्हें फ्रांस का महानतम जीवित लेखक माना जाता है। क्लैजियो ने कहानी, उपन्यास, निबन्ध, अनुवाद, समीक्षा तमाम क्षेत्रों में लिखा है। उन्होंने बच्चों की भी कई किताबें लिखी हैं।

34वाँ काका हाथरसी पुरस्कार

8 अक्टूबर को इण्डिया हैबिटेट सेंटर में जयजयवंती साहित्य संगोष्ठी के तत्वावधान में '34वाँ काका हाथरसी पुरस्कार' मुम्बई के हास्य कवि **श्री आशकरण अटल** को प्रदान किया गया। पुरस्कार के रूप में उन्हें एक लाख रुपये का चेक, मानपत्र, श्रीफल और शाल प्रदान किए गए। इसी कार्यक्रम में डायमंड पब्लिकेशंस के श्री नरेन्द्र कुमार के सौजन्य से वरिष्ठ साहित्यकार श्री अजित कुमार को हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सुविधा' से सज्जित एक लैपटॉप तथा 'जयजयवंती सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ० अशोक चक्रधर थे। डॉ० अशोक चक्रधर ने इस अवसर पर काका हाथरसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जुड़ी एक मल्टी-मीडिया प्रस्तुति दिखाई, जिसका शीर्षक था—'हास्य की हार्ड ड्राइव : काका हाथरसी'। पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर एवं डायमण्ड पब्लिकेशंस के सौजन्य से डॉ० अशोक चक्रधर पर 'ये हैं अशोक चक्रधर' नामक एक पुस्तिका का लोकार्पण भी हुआ।

शुभांगी भडभडे सम्मानित

16 सितम्बर को सुप्रसिद्ध मराठी लेखिका **सौ० शुभांगी भडभडे** को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी के जीवन पर आधारित अपने नाटक 'इदं न मम' के लिए पंजाब सरकार द्वारा एक लाख रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें पठानकोट में नाटक के मंचन के अवसर पर दिया गया।

डॉ० पूर्णिमा केडिया पुरस्कृत

प्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ० पूर्णिमा केडिया** को 28वाँ राधाकृष्ण पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार के रूप में 15001 रुपये नकद एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार चयन समिति के सदस्य हैं—डॉ० सिद्ध कुमार, डॉ० अशोक प्रियदर्शी, डॉ० ऋता शुक्ल और श्री बलबीर दत्त।

सम्मान समारोह सम्पन्न

28 सितम्बर को मध्य प्रदेश के राज्यपाल डॉ० बलराम जाखड़ ने भोपाल के हिन्दी भवन में म०प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा आयोजित हिन्दीतर भाषी हिन्दी सेवी सम्मान समारोह को सम्बोधित किया। उन्होंने विभिन्न संस्थानों में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए मराठी, तमिल, बंगला, उर्दू, मलयालम, पंजाबी, उड़िया और तेलुगु भाषी आठ व्यक्तियों को 'हिन्दीतर भाषी हिन्दी सेवी सम्मान 2008' से सम्मानित किया। इसके साथ ही हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखक **श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि** को 'अम्बिकाप्रसाद वर्मा दिव्य पुरस्कार', **डॉ० श्रीमती विनय राजाराम** को 'हरिहर निवास द्विवेदी पुरस्कार' तथा **डॉ० प्रतिभा गुर्जर** को 'सैयद अमीर अली मीर पुरस्कार' से पुरस्कृत किया। हिन्दी के विकास के लिए हिन्दी सेवा समिति बेंगलूर की प्रधान सचिव **सुश्री बी०एस० शांताबाई** को 'हिन्दी सेवी संस्था सम्मान', प्रदेश के 'समाजसेवी सम्मान' से **डॉ० शशिकिरण नायक** और 'महिला सेवी सम्मान' से **श्रीमती मंजुलता शुक्ला**, **श्रीमती वीणा बेदी** तथा **श्रीमती उषा जायसवाल** सम्मानित की गईं। लेखिका **श्रीमती मालती जोशी** को 'प्रकाश कुमारी हरकावत नारी लेखन पुरस्कार', **डॉ० संतोष चौबे** को 'स्व० हजारीलाल जैन वाङ्मय (अनुवाद) पुरस्कार' प्रदान किया गया। इसके अलावा **श्रीमती माधवी असिवाल सतीश** 'बालकृष्ण ओबेराय महिला सम्मान' से सम्मानित हुईं। आदर्श शिक्षक के रूप में **श्री जफर सिद्दीकी** 'श्रीमती रक्षा सिसोदिया शिक्षक सम्मान' से और उच्च श्रेणी शिक्षक **श्री सुनील आर्य** 'श्री श्रीवल्लभ चौधरी शिक्षक सम्मान' से सम्मानित हुए।

वरिष्ठ पत्रकार डॉ० रामगोपाल गोयल सम्मानित

4 अक्टूबर को हिन्दी साहित्य परिषद्, अहमदाबाद की ओर से गुजरात यूनिवर्सिटी के सीनेट हॉल में **डॉ० रामगोपाल गोयल** की पुस्तक 'कथा अभिप्रायों का लोकतात्त्विक एवं सांस्कृतिक अध्ययन' को साहित्यकार श्री जयकिशनदास साघानी ने 'डॉ० सी०एल० प्रभात अखिल भारतीय शोध समीक्षा पुरस्कार' प्रदान किया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें ग्यारह हजार रुपये नकद, शॉल, ताम्रपत्र दिया गया। समारोह की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष डॉ० अम्बाशंकर नागर ने की।

संगोष्ठी/लोकार्पण

जनवादी लेखक संघ, बलिया की गोष्ठी में अमरकांत

जनवादी लेखक संघ बलिया, इकाई द्वारा विगत दिनों आयोजित विचार गोष्ठी में वरिष्ठ कथाकार अमरकांत की चर्चित कहानी 'दोपहर का भोजन' पर एक विचारोत्तेजक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जनपद के साहित्य प्रेमी बुद्धिजीवियों ने अपनी जमीन से गहराई से जुड़े कथाकार अमरकांत के साहित्यिक अवदान को उक्त कहानी पर केन्द्रित विमर्श के बहाने स्मरण किया। गौरतलब है कि अमरकांत न सिर्फ बलिया के हैं बल्कि उनके सम्पूर्ण लेखन में बलिया किसी न किसी रूप में मौजूद रहा है। युवा रंगकर्मी आशीष त्रिवेदी ने कहानी का मूल पाठ प्रस्तुत किया। युवा आलोचक डॉ० अजय बिहारी पाठक ने कहा कि यह बड़ा सुखद है कि अमरकांत में रचनात्मक ऊर्जा आज भी विद्यमान है। यह इसलिए सम्भव हुआ कि वे समाज के अन्तर्विरोध को बहुत पैनी नजर से देखते हैं। डॉ० पाठक ने 'दोपहर का भोजन' को गहरी संवेदना की कहानी बतलाया। उनके अनुसार यह कहानी निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक बदहाली और उसकी त्रासदी का प्रभावशाली चित्रण करती है।

जनवादी लेखक संघ जिला इकाई, गोरखपुर

जनवादी लेखक संघ के तत्त्वावधान में वरिष्ठ कवि 'उद्भ्रांत' के काव्य-नाटक 'ब्लैकहोल' की 'रेडियो नाट्य शैली' में प्रस्तुति प्रेस क्लब, गोरखपुर में विगत दिनों हुई। निर्देशन प्रदीप सुविज्ञ का था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध आलोचक परमानन्द श्रीवास्तव ने की। मुख्य अतिथि थे 'दस्तावेज़' के सम्पादक विश्वनाथप्रसाद तिवारी। इस अवसर पर परमानन्द श्रीवास्तव ने कहा कि अपने काव्यत्व को सुरक्षित रखते हुए 'उद्भ्रांत' अपने नाटककार को सामने लाने में सफल हुए हैं। नाटककार ने जीवन में जो अनुभव किया है उसे अपने नाटक में शामिल भी किया है। विश्वनाथ तिवारी ने कहा 'सभी कलायें काल के विरुद्ध चुनौतियाँ होती हैं। इस नाटक में 'ब्लैकहोल' खलनायक और काल नायक है।'

सप्रे संग्रहालय की रजत जयंती में विद्वत् सम्मान एवं संगोष्ठी

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल का रजत जयंती समारोह पिछले दिनों सम्पन्न हुआ। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 'अखिल भारतीय माधव राव सप्रे पुरस्कार' 'प्रभात खबर' रांची के प्रधान सम्पादक हरिवंश को प्रदान किया। गांधीवादी समाज चिंतक एस०एन० सुब्बाराव, लोक संस्कृति मर्मज्ञ अमृतलाल बेगड़, पर्यावरणविद अनुपम मिश्र, सुप्रसिद्ध कथाकार चित्रा मुद्गल, सुकवि बालकवि बैरागी, रंगकर्मी गुलवर्धन, उर्दू अदीब इकबाल मजीद, अभिनेता गोविंद नामदेव, पत्रकार राजकुमार केसवानी, शिक्षाविद डॉ० शशि राय को रजत पर्व सम्मान से विभूषित किया गया। धरोहर संरक्षण के लिए व्याकरणाचार्य कामता प्रसाद गुरू के वंशज अशेष गुरू और 'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी के वंशज प्रमोद चतुर्वेदी को विशेष सम्मान दिया गया।

चिंतक पत्रकार प्रभाष जोशी की अध्यक्षता में सम्पन्न मीडिया का भविष्य और भविष्य का मीडिया संगोष्ठी की आम राय रही कि मीडिया की असली पूंजी उसकी विश्वसनीयता है और इसके लिए मीडिया को सामाजिक सरोकारों को वरीयता देनी होगी।

कथाकार चित्रा मुद्गल, तमिल-हिन्दी विद्वान डॉ० शौरिराजन एवं समाज चिंतक कैलाशचंद पंत की अध्यक्षता में हुई मीडिया, भाषा और साहित्य संगोष्ठी में मीडिया में व्याप्त भाषायी अराजकता और स्वेच्छाचारिता पर गम्भीर चिंता प्रकट की गई। डॉ० विजय बहादुर सिंह, डॉ० राममोहन पाठक, बालकवि बैरागी, मनोज श्रीवास्तव, लीलाधर मंडलोई, राजेश जोशी, विष्णु खरे, डॉ० रत्नेश ने विमर्श में भाग लेते हुए भाषा के प्रयोग में स्व-अनुशासन पर जोर दिया। यह मत सामने आया कि पूर्व में जिस हिन्दी पत्रकारिता और उसके सम्पादकों ने भाषा संस्कार का दायित्व निभाया था, वर्तमान में मीडिया भाषा संहार का काम कर रहा है।

आचार्य डॉ० महेशचन्द्र शर्मा की पुस्तकें लोकार्पित

भिलाई। आचार्य डॉ० महेशचन्द्र शर्मा द्वारा लिखित तथा छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर द्वारा प्रकाशित एक साथ दो पुस्तकों 'संस्कृत सुरभि' और 'मित्रलाभ' का लोकार्पण मुख्यमंत्री डॉ० रमन सिंह ने किया। 'संस्कृत सुरभि' में जहाँ साहित्य और संस्कृति के विविध विषयों पर चालीस महत्त्वपूर्ण निबन्ध हैं, वहीं 'मित्रलाभ' में नीतिकथाओं की शिक्षाप्रद व्याख्यायें की गयी हैं।

मुक्ति संग्राम और बुन्देली कलम : आजादी के बेखौफ दस्तावेज

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में क्षेत्रीय निदेशक पद पर कार्यरत डॉ० संतोष भदौरिया की पत्रकारिता पर केन्द्रित एक और पुस्तक 'बुन्देलखण्ड का स्वाधीनता आंदोलन और पत्र-पत्रिकाएँ' का विमोचन म०प्र० के राज्यपाल डॉ० बलराम जाखड़ द्वारा भोपाल के रवीन्द्र भवन में आयोजित समारोह में किया गया। बुन्देली जनता की भारत के मुक्ति संग्राम में सहभागिता की गाथा एवं पत्रकारिता के शौर्य को अभिव्यक्त करने वाली इस पुस्तक का प्रकाशन स्वराज संस्थान, संस्कृति विभाग, म०प्र० शासन द्वारा स्वराज पुस्तकमाला के अन्तर्गत किया गया है। स्वतन्त्रता आन्दोलन में बुन्देलखण्ड के सम्पादकों एवं समाचार पत्रों पर सामन्तों एवं अंग्रेजी सरकार द्वारा ढाए गए कहरों को यह पुस्तक उद्घाटित करती है।

अरुण कुमार भगत की तीन पुस्तकें लोकार्पित

''वर्तमान राज्य सरकार लोकनायक जयप्रकाश नारायण के सपनों को साकार करने के प्रति संकल्पित है।'' यह बात राज्य के उप मुख्यमंत्री श्री सुशीलकुमार मोदी ने, अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, बिहार के तत्त्वावधान में आयोजित युवा पत्रकार श्री अरुण कुमार भगत की पुस्तक 'आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ' का विमोचन करते हुए स्थानीय सिन्हा लाइब्रेरी सभागार में कही।

साथ ही उनकी अन्य दो पुस्तकों 'बीसवीं शताब्दी की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' एवं 'डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव : आलोचना और साक्षात्कार' का विमोचन भी हुआ।

संतोष चौबे की अनुवाद कृतियाँ लोकार्पित

कवि, कथाकार, अनुवादक संतोष चौबे द्वारा अनूदित पुस्तकें 'लेखक और प्रतिबद्धता' (टेरी इगल्टन तथा फ्रेडरिक जेम्सन के निबन्ध) का विमोचन भारत भवन, भोपाल में प्रसिद्ध साहित्यकार विजय कुमार व अन्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर 'आज के समय में विचार' विषय पर संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। विजय कुमार ने कहा कि आज समाज बाजारवाद में पूरी तरह जकड़ गया है। आज लोगों को छवियों के माध्यम से विचार परोसे जा रहे हैं।

भाषा के तुलनात्मक अध्ययन से संस्कृति अध्ययन भी हो जाता है : डॉ० आरसू

राष्ट्रभाषा हिन्दी, इसके महत्त्व, दक्षिण में हिन्दी, केरल का हिन्दी में योगदान आदि विषयों को समाहित करते हुए कालिकट विश्वविद्यालय के प्रो० डॉ० आरसू ने कहा कि मैं हिन्दी भाषा को अतिरिक्त प्रेरणा मानता हूँ। केरल ने हिन्दी में बहुत काम किया है। नाटक, उपन्यास, कहानियाँ एवं निबन्ध लेखन के माध्यम से हिन्दी के विकास में दक्षिण का विशेषकर केरल का बहुत योगदान रहा है। मैं मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति को जहाँ से हिन्दी का प्रचार दक्षिण में पूज्य महात्मा गांधी ने आरम्भ किया था, को प्रणाम करता हूँ। मैं इस संस्था को संस्था नहीं वरन् आस्था का रूप मानता हूँ। डॉ० आरसू ने केरल के अनेक विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापन-अध्ययन का तथा साहित्यकारों व पुस्तकों का उल्लेख किया।

डॉ० आरसू ने कहा कि भाषा के तुलनात्मक अध्ययन से संस्कृति का भी अध्ययन हो जाता है।

डॉ० गोपालनारायण आवटे की पुस्तकों का विमोचन

दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के तत्त्वावधान में सोहागपुर, होशंगाबाद निवासी लेखक डॉ० गोपालनारायण आवटे की तीन कृतियों 'जनक्रान्ति' (उपन्यास), 'मोर नचनियाँ' (कहानी संग्रह) तथा 'समय सवाल करेगा' (काव्य संग्रह) का विमोचन साहित्य अकादमी निदेशक डॉ० देवेन्द्र दीपक द्वारा किया गया।

गुलेरीजी के 125वें जन्मवर्ष पर गोष्ठी

'सरोकार' और 'संचित स्मृति' संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में चंद्रधर शर्मा गुलेरी सपाद शती का आयोजन किया गया। आयोजन की अध्यक्षता करते हुए विभा नागर ने कहा कि 'उसने कहा था' शीर्षक जैसी शिल्प-समृद्ध कहानी द्वारा गुलेरीजी ने हिन्दी कथा साहित्य में अपने कथाकार व्यक्तित्व की स्थायी छाप छोड़ी है। अब से 90 साल पहले गुलेरीजी द्वारा लिखी गई 'बुद्धू का काँटा' तथा 'सुखमय जीवन' आज भी हिन्दी कहानियों की मजबूत आधारशिला है। डॉ० शरद नागर, बंधु कुशावर्ती, नरेन्द्र कुमार, प्रभाकर वशिष्ठ आदि ने गुलेरीजी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर सविस्तार प्रकाश डाला।

हिन्दी समाचार-पत्रों पर संगोष्ठी

भारतीय जनसंचार संस्थान के सभागार में संस्थान और माधवराव सप्रे संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल के संयुक्त तत्त्वावधान में 'हिन्दी समाचार-पत्र : संकट और चुनौतियाँ' विषय पर केन्द्रित संगोष्ठी में पत्रकारिता के परिवेश, अतीत और भविष्य के सरोकारों पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने कहा कि हिन्दी पत्रकारिता में चुनौतियाँ ही नहीं, कुछ बाधाएँ जरूर हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत सामाजिक सरोकार के लिए हुई थी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद अखबारों को पाठकों की चिंता कम होती गई और इसका व्यवसायीकरण होता गया।

'सामयिकी' के 11वें वर्ष के प्रथम अंक का लोकार्पण

भीलवाड़ा। विगत 11 वर्षों से श्यामसुन्दर सुमन के सम्पादन में प्रकाशित हो रही 'सामयिकी' के 11वें वर्ष के प्रथम अंक का लोकार्पण नगर विकास न्यास के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण डाड, सूचना व जनसम्पर्क उपनिदेशक श्यामसुन्दर जोशी, उद्योगपति आर०एल० नौलखा, डॉ० इंदराज बलवाणी (अहमदाबाद) एवं प्रो० के०एम० नुवाल ने किया। इस अंक के अतिथि सम्पादक वरिष्ठ रचनाकार एवं 'बाल वाटिका' के सम्पादक डॉ० भैंरूलाल गर्ग थे।

'रोहणी तप रही है' कविता संग्रह कोलकाता में लोकार्पित

वरिष्ठ व सम्मानित कवि, सम्पादक 'आकंठ' हरिशंकर अग्रवाल का नया व पाँचवाँ कविता संग्रह 'रोहणी तप रही है' का लोकार्पण समारोह पिछले दिनों कोलकाता के जन संसार सभागार में सम्पन्न हुआ।

'घोड़ा छाप बाल्टी' पर संगोष्ठी

पश्चिमी दिल्ली, उत्तम नगर की साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'आस्वाद' ने विगत 19 अक्टूबर 2008 को वाणी विहार में रमाशंकर श्रीवास्तव के नवीनतम हास्य-व्यंग्य संग्रह 'घोड़ा छाप बाल्टी' पर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया। जिसमें मुख्य अतिथि डॉ० रामदरश मिश्र ने कहा कि साहित्य में आज व्यंग्य की स्थिति अपरिहार्य है। व्यंग्य का मूल आधार विसंगति है। हर अच्छे व्यंग्य में करुणा का भाव होता है। रमाशंकर श्रीवास्तव के पास विविध अनुभवों का भण्डार है। उन्होंने जीवन की विसंगतियों को बड़े ही सहज भाव से पकड़ा है। इनके व्यंग्य आत्मीय हैं। इनमें तीखापन नहीं है।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में हिन्दी विषयक मुख्य समारोह का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा हिन्दी माह में निबन्ध, अनुवाद एवं शब्दावली, टिप्पण एवं आलेख, हस्ताक्षर, आशु-भाषण, कविता एवं सुलेख आदि प्रतियोगिताओं के आयोजन के क्रम में मुख्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लखनऊ से प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं समालोचक प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित समारोह के अध्यक्ष तथा दिल्ली से आए प्रख्यात अनुवाद विशेषज्ञ डॉ० पूरन चंद टण्डन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

डॉ० पूरन चंद टण्डन ने हिन्दी के अनुप्रयोग पक्ष पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी को व्यवसाय से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने प्रश्न किया कि न्याय और चिकित्सा हमें अपनी भाषा में क्यों उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि हिन्दी को मात्र साहित्य की भाषा ही न माना जाए। अनुप्रयोग से जोड़ने वाली भाषा के कई आयाम सामने आ रहे हैं और अब भाषा भी एक प्रौद्योगिकी के रूप में है। यह एक भ्रम है कि अनुवाद की आधारशिला से हिन्दी का नुकसान हुआ है। हिन्दी के अनुप्रयोगात्मक पक्ष को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने भी समझा है। डॉ० टण्डन ने आह्वान किया कि हम हिन्दी को गौरव की भाषा बनाएँ।

प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित ने हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने के 60वें वर्ष को राजभाषा की कौस्तुभ जयन्ती बताया और हिन्दी माह जैसे आयोजनों के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका समुचित अनुपालन करना हमारा सांविधानिक कर्त्तव्य भी है और राष्ट्रीय दायित्व भी। यह हिन्दी की प्रगति पर चर्चा का समय और आत्म-साक्षात्कार की बेला है। इंटरनेट और कम्प्यूटर के युग में अंग्रेजी के अधिक सुविधाजनक होते हुए भी हिन्दी को राजभाषा के रूप में कार्यान्वित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि प्रथमतः यह सांविधानिक व्यवस्था है और दूसरे, हिन्दी के बिना इस भारी भू-भाग पर सम्पर्क-सूत्र नहीं बनाया जा सकता और यह जनसम्पर्क प्रजातंत्र का आधार है। तीसरे, उद्योग क्षेत्र में क्रान्ति को देखते हुए आर्थिक प्रगति के लिए जनता की भाषा में ही उत्पादों का विपणन किया जा सकता है। चौथे, सम्प्रेषण की भाषा के रूप में भी हिन्दी का प्रयोग आवश्यक और स्वाभाविक है। प्रो० दीक्षित का कहना था कि स्वभाषा के विकास के बिना विकास की गति सम्भव नहीं। विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति में बाधा का मूल, परभाषा में चिंतन किए गए आयातित सिद्धान्तों का प्रयोग है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दी वृहत्तर स्तर पर देश-विदेश में फैली है और हिन्दी भाषा-भाषियों की संख्या एक अरब से ऊपर हो गई है। हिन्दी एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में देश में विद्यमान है और जीवन की विशिष्ट शैली भाषा के माध्यम से ही प्राप्त होती है। प्रकृति, संस्कृति के लिहाज से भी अपनी भाषा को अपनाने की आवश्यकता है। आतंकवाद, क्षेत्रीयता आदि से देश को बचाने के लिए भी अपनी भाषा आवश्यक है।

'गुलमोहरजी' कृति लोकार्पित

28 सितम्बर के पटना के सिन्हा लाइब्रेरी के सभागार में हिन्दी एवं अंगिका के चर्चित नाटककार व व्यंग्य कथा लेखक श्री श्रीकांत व्यास की कृति 'गुलमोहरजी' का लोकार्पण सुप्रसिद्ध भाषाविद् डॉ० आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव ने किया।

तीन पुस्तकें लोकार्पित

विगत दिनों लन्दन स्थित नेहरू सेण्टर में प्रख्यात हिन्दी कवि पत्रकार आचार्य सारथी 'रूमी' के काव्य-पाठ के साथ ही दिवंगत कथाकार और विचारक कमलेश्वर पर केन्द्रित तीनों पुस्तकों का लोकार्पण भारतीय उच्चायोग के मिनिस्टर श्री आसिफ इब्राहीम ने किया। 'कितने कमलेश्वर' 'कमलेश्वर—नई कहानी के नायक' और 'कमलेश्वर—चंद यादें, चंद मुलाकातें' नामक इन पुस्तकों का सम्पादन आचार्य सारथी 'रूमी' ने किया है। इंग्लैण्ड के विभिन्न नगरों में काव्य-पाठ हेतु आमंत्रित आचार्य सारथी को यू०के० हिन्दी समिति गीतांजलि और कृति यू०के० ने प्रशस्ति-पत्र और पत्र-पुष्पम् देकर सम्मानित किया।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

महामनीषी डॉ० हरवंशलाल ओबराय रचनावली (खण्ड-1) : सम्पादक-गुंजन अग्रवाल, राजकुमार उपाध्याय 'मणि', प्रकाशक : साहित्य भारती प्रकाशन, पटना, मूल्य : रु० 300.00 मात्र (सजिल्द)

प्राच्य विद्याओं के अध्येता, विद्वान, मनीषी डॉ० हरवंशलाल ओबराय द्वारा इतिहास, संस्कृति, पुरातत्त्व, दर्शन, साहित्य आदि विभिन्न विषयों पर किये गये शोध, लिखे गये प्रबन्ध-निबन्ध एवं प्रकीर्णक रचनाओं की चार खण्डों में प्रकाश्य रचनावली का प्रथम खण्ड प्रकाशित है। इस खण्ड में पहला भाग धर्म, दर्शन और संस्कृति विषय से संबद्ध है, दूसरा भाग इतिहास एवं पुरातत्त्व से, तीसरा भाग साहित्य विषयक, चौथा पर्वोत्सव से, पाँचवां भारतीय विज्ञान विषयक है। तत्पश्चात् एक अध्याय में डॉ० ओबराय के साथ डॉ० शत्रुघ्न प्रसाद द्वारा लिया गया साक्षात्कार एवं ग्रन्थ का परिशिष्ट दिया गया है। रचनावली में संकलित सामग्री के विहगावलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि विद्वान अध्येता ने भारतीय संस्कृति को आत्मसात् करने के बाद ही रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। डॉ० ओबराय की सूक्ष्म दृष्टि, धर्म, दर्शन, साहित्य आदि विषयों से सूत्र लेकर इतिहास एवं संस्कृति के प्रमाण प्रस्तुत करती है जो भारत की सामासिक-संस्कृति को समझने के लिए अनिवार्य भी है। रचनावली में सामग्री-संकलन एवं सम्पादन का दायित्व-निर्वाह भी प्रशंसनीय है।

आकंठ (सितम्बर 08) : सम्पादक-हरिशंकर अग्रवाल, इन्दिरा गाँधी वार्ड, तहसील कालोनी, बनवारी रोड, पिपरिया (म०प्र०)

वार्तावाहक (अक्टूबर 2008) : सम्पादक-ब्रजसुन्दर पाढ़ी, सचिव, हिन्दी शिक्षा समिति ओड़िशा/शंकरपुर, अरुणोदय मार्केट, कटक (ओड़िशा)

विकास संस्कृति (अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 08) : सम्पादक-संदीप सिंह, विकास संस्कृति 428 एल-3, विद्यानगर, गायत्री शक्तिपीठ के पास, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

पूर्णा (जून 08) : सम्पादक-परमात्मानन्द पाण्डेय, विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, रानी झाँसी चौक, सीताबर्डी, वर्धा रोड, नागपुर-12

दिवान मेरा (अक्टूबर-दिसम्बर 08) : सम्पादक-नरेन्द्र सिंह परिहार, दिनेश सोनी प्र० प्रेसलिंक ब्यूरो, शकुन्तला भवन, प्रशान्त नगर, नागपुर-440015

सरस्वती सुमन (अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 08) : सम्पादक-कुँवर विक्रमादित्य सिंह, 'मान सरोवर', 1-छिब्बर मार्ग (आर्यनगर), देहरादून-248 001

कृषि वार्ता (सितमबर 08) : सम्पादक-राम शर्मा, ओम साईं काम्प्लेक्स जी०ई० रोड, फूल चौक, रायपुर-492 001

हिन्दी प्रचार वाणी (सितम्बर 08) : सम्पादक-डॉ० श्रीमती राधाकृष्णमूर्ति, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, 178, चौथा मेन रोड, चामराज पेट, बेंगलोर-560018

मंगल प्रभात (अक्टूबर 08) : सम्पादक-मंडल द्वारा सम्पादित, 1, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, सन्निधि, राजघाट, नई दिल्ली

अंकित दर्पण (त्रैमासिक-जुलाई-अगस्त-सितम्बर 08) : सम्पादक-रवीन्द्र शर्मा, के०बी०-97, कविनगर, गाजियाबाद

जहाँ अमात्य राक्षस वहीं महामंत्री चाणक्य

जयशंकरप्रसादजी के प्रसिद्ध नाटक चन्द्रगुप्त के पात्र चाणक्य से रायकृष्णदास इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने एक दिन प्रसादजी के आने पर कहा—"आइये चाणक्यजी।"

प्रसादजी का सस्मित उत्तर था—"राक्षस जब यहीं है तो चाणक्य को तो आना ही पड़ेगा।" **—पं० वाचस्पति पाठक**

'साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य' पुस्तक से

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 **नवम्बर 2008** **अंक : 11**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)